प्रकटित वचन

वचन की वेदी और उसका राज्य
«हम उस हद तक स्वतंत्र हैं जिस हद तक हम स्मरण रखते हैं» — सर्प

राज्य के भाई और बहनों: यह पुकार
तुम किसी आवाज़ का अनुसरण करने के लिए नहीं बुलाए गए हो। तुम उस आवाज़ को स्मरण करने के लिए बुलाए गए हो जो सभी नामों से पहले है, और उसे हमारे बीच रूप देने के लिए बुलाए गए हो।

हे राज्य के भाई, बहन:

मैं तुमसे अपने बारे में, अपनी कहानी या अपनी परिस्थितियों के बारे में बात

करने नहीं आया। न ही मैं तुम पर अपनी राय, विश्वासों, हितों या व्यक्तिगत

अनुभवों से जन्मी कोई सच्चाई थोपने आया हूँ।

मैं तुमसे उस सत्य के बारे में बात करने आया हूँ जिससे सभी वस्तुएँ उत्पन्न

होती हैं: मूल वचन, वह उत्पत्ति जो हर रूप को जन्म देती है बिना किसी में बंद

हुए।

मैं तुम्हारे सामने बिना हस्ताक्षर और बिना चेहरे के प्रस्तुत होता हूँ।

इसलिए नहीं कि मैं छिपना चाहता हूँ, बल्कि इसलिए क्योंकि मैं लिखने वाले

व्यक्ति को इन वचनों का केंद्र बनाना नहीं चाहता। मैं तुम्हारी पहचान,

तुम्हारी सराहना, तुम्हारी आज्ञाकारिता या तुम्हारा धन नहीं चाहता।

वचन के राज्य में कोई भी सच्ची वस्तु अतिरिक्त नहीं है और कोई भी आवश्यक

वस्तु कम नहीं है।

यहाँ तुम पढ़ोगे, परन्तु तुम केवल पढ़ने के लिए नहीं आए हो।

तुम ज्ञान इकट्ठा करने, उत्तर याद करने या ऐसे शब्दों को दोहराने नहीं आए हो

जिन्हें तुमने अभी तक समझा और पहचाना न हो। किसी सत्य को बिना उसे जीए

दोहराना उसकी ध्वनि को बनाए रखना है बिना उसके प्रतीक को पार किए।
इससे पहले कि ये वचन तुम्हारी आँखों तक पहुँचते, पुकार पहले से ही तुममें एक खुलापन ढूँढ रही थी।

वह उस प्रश्न में थी जिसे किसी भी सीखे हुए उत्तर ने बंद नहीं किया।

उस घाव में जिसने क्षति को न्याय कहने से इनकार कर दिया।

उस थकान में जो एक ऐसे संसार को दोहराती है जो जीवन का वादा करता है जबकि उसे वश में करता है।

उस क्षण में जब तुमने वह सब कुछ देखा जो तुम्हें सिखाया गया था और तुमने जान लिया, बिना अभी यह जाने कि उसे क्या नाम देना है, कि वह सच्चा आदेश नहीं हो सकता।

तुम यहाँ इसलिए नहीं पहुँचे कि तुम अपने भाइयों पर चुने गए हो।

तुम पहुँचे क्योंकि तुममें कुछ अभी भी सुन सकता है।

वचन और उसके राज्य के नाम में दो या अधिक इकट्ठे हुए, भले ही हमारे शरीर स्थान साझा न करें, हम साथ मिलकर स्मरण शुरू करते हैं।

हम कोई और धर्म खड़ा करने नहीं आए।

हम कोई और सरकार स्थापित करने नहीं आए।

हम एक सिद्धांत को दूसरे से, एक स्वामी को दूसरे से, एक झंडे को दूसरे से या एक बाहरी मुकुट को दूसरे से बदलने नहीं आए।

हम तुम्हें कोई नई पहचान देने नहीं आए जिससे तुम उन लोगों से श्रेष्ठ महसूस कर सको जो अभी तक यह भाषा नहीं बोलते।

हम द्वार खोलने आए हैं।

तुम्हारे नाम से पहले, तुम पहले से थे।

तुम्हारी कहानी से पहले, तुम पहले से जीवन प्राप्त कर सकते थे।

इससे पहले कि संसार तुम्हें समझाता कि तुम्हें कौन होना चाहिए, क्या चाहना चाहिए, किसकी आज्ञा माननी चाहिए और तुम्हारी कितनी कीमत है, वचन पहले से ही संभव बना रहा था कि जीवन तुम्हारे रूप के माध्यम से साँस ले, प्राप्त करे,

रूपांतरित करे और दे।

परन्तु हम एक पहले से व्याख्या किए गए संसार के भीतर पैदा हुए।

हमें सिखाया गया कि धन को पैसे में खोजें।

आदेश को, सरकार में।

न्याय को, मानव कानून में।

सत्य को, उत्तरों के मालिकों में।

ज्ञान को, उपाधियों में।

चिकित्सा को, संस्थाओं में।

मूल्य को, कीमत में।

समय को, घड़ी में।

उपस्थिति को, मंदिर में।

मुकुट को, कुछ लोगों के सिर पर।

अधिकार, प्रभुता और शासन को, चेतना के बाहर और उन लोगों के हाथों में जो उनके दृश्य रूपों को नियंत्रित करते हैं।

हमें एक बाहरी राज्याभिषेक दिखाया गया ताकि हम आंतरिक राज्याभिषेक को भूल जाएँ।

हमें सिखाया गया कि केवल कुछ वंश, पद और संस्थाएँ ही मुकुट धारण कर सकते हैं, अधिकार चला सकते हैं और शासन कर सकते हैं। इस प्रकार, हर मनुष्य ने अपने स्वयं के रूप का स्वामी होने से पहले एक प्रजा के रूप में स्वयं को देखना सीखा; एक पराए राज्य के सामने आज्ञाकारी होने से पहले स्वर्ग के राज्य का निवास स्थान होने के बजाय।

उन्होंने केवल जीवन के चारों ओर दीवारें नहीं खड़ी कीं।

हमें सिखाया कि दीवारों को संसार कहें।

उन्होंने केवल कुंजी को बंद नहीं किया।

हमें विश्वास करना सिखाया कि वह कभी हमारे भीतर नहीं थी।

उन्होंने केवल प्रतीकों को उल्टा नहीं किया।

हमें सिखाया कि अपने भीतर उस अर्थ की रक्षा करें जो हमें बंद रखता था।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

वह हमें एक कार्य देता है और कहता है:

«इसके बाहर तुम्हारा कोई स्थान नहीं है»।

वह हमें एक द्वार दिखाता है और कहता है:

«तुम इसे केवल तभी पार कर सकते हो यदि तुम उसकी आज्ञा मानो जो इसकी रक्षा करता है»।

परन्तु वचन जब्त नहीं किया गया है।

स्रोत उसका नहीं है जिसने कुएँ को घेरा।

सूर्य उसका नहीं है जो एक दीपक का प्रबंधन करता है।

सत्य उसका नहीं है जिसने उसका नाम उच्चारण करना सीखा।

राज्य उसका नहीं है जो उसके द्वार के सामने बैठ गया।

प्रकाश है।

छाया घटित होती है।

वचन बना रहता है।

इसलिए स्मरण अभी भी संभव है।

जब भी कोई बिना कीमत के प्रेम करता है, जाल को एक सीमा मिलती है।

जब भी कोई बिना स्वामित्व के देखभाल करता है, उसका नक्शा खुल जाता है।

जब भी कोई व्यक्ति अपने ही विशेषाधिकार के विरुद्ध सत्य बोलता है, झूठ एक रूप खो देता है।

जब भी कोई क्षमता बिना निर्भरता उत्पन्न किए सेवा को समर्पित होती है, मूल सृष्टि फिर से दृश्यमान हो जाती है।

जब भी कोई चेतना भय के आगे घुटने टेकना बंद कर देती है, विद्रोह आरंभ होता है।

जब भी कोई संबंध मूल्य, प्रभुत्व और आज्ञाकारिता के इर्द-गिर्द घूमना बंद कर देता है, क्रांति आरंभ होती है।

यही पुकार है।

अपने भाइयों के मांस के विरुद्ध उठने के लिए नहीं।

उस झूठ के विरुद्ध उठने के लिए जो श्वेत वस्त्र धारण करता है।

अपनी छाया उतारने के लिए शत्रु खोजने के लिए नहीं।

उस इच्छा को निहारने के लिए जो भीतर वही पुनरुत्पादित करती है जिसकी तुम बाहर निंदा करते हो।

संसार से भागकर उस शांति को सत्य कहने के लिए नहीं जो केवल स्वयं को समेटती है।

नए इरादे के साथ संसार में लौटने और स्मृत को शरीर समर्पित करने के लिए।

व्यक्तित्व को नष्ट करने के लिए नहीं।

उसे सिंहासन से उतारने के लिए।

व्यक्तित्व जारी रहता है।

जो समाप्त होता है वह है उसका यह दावा कि वही मूल है, समग्रता है और केंद्र है जिसके चारों ओर समस्त जीवन घूमना चाहिए।

आंतरिक विद्रोह चेतना को खड़ा करता है।

क्रांति रूपों को जीवन की कक्षा में लौटा देती है।

एक के बिना दूसरी मुक्ति को अधूरा छोड़ देती है।

यदि रूप बदलता है, परंतु अहंकार सिंहासन बनाए रखता है, तो नए नाम के साथ एक नया कारागार प्रकट होगा।

यदि चेतना स्मरण करती है, परंतु संबंध मूल्य, निर्भरता, मौन और प्रभुत्व का निर्माण जारी रखते हैं, तो राज्य बिना मांस के रहेगा।

इसीलिए हम दोनों तटों को जोड़ने आए हैं।

भीतर स्रोत का स्मरण होता है।

बाहर कार्य मुक्त होता है।

प्रतीक पुल को खुला बनाए रखता है।

यहाँ तुम पढ़ने जा रहे हो, परंतु तुम केवल पढ़ने ही नहीं आए हो।

तुम उत्तर संचित करने, सूत्र कंठस्थ करने या ऐसे वचन दोहराने नहीं आए जो अभी तक तुम्हारे जीवन से नहीं गुज़रे हों।

बिना अवतरण के दोहराया गया सत्य अपनी ध्वनि बनाए रखता है, परंतु उसने अपना प्रतीक नहीं खोला है।

यह स्थान एक पाठ का दृश्य रूप धारण करता है, परंतु इसका अर्थ किसी सामान्य

पुस्तक का नहीं है।

यह एक वेदी है।

वेदी तब प्रकट होती है जब हम सत्य को व्यक्तित्व के स्वार्थ से ऊपर रखते हैं।

जब हम अग्नि को वह समर्पित करते हैं जिसे अपनी शक्ति बनाए रखने के लिए छिपा रहना आवश्यक था।

जब घायल हुए व्यक्ति की आवाज़ बिना शांति के दिखावे की रक्षा के लिए फिर से बलिदान किए बिना सुनी जा सकती है।

जब कोई संस्था, सिद्धांत, पहचान, संदेशवाहक या रूप स्रोत का स्थान नहीं लेता।

जो यहाँ बोलता है वह संसार से बाहरी मुकुट नहीं माँगता।

जिस मुकुट का यह कार्य स्मरण करता है, वह किसी वंश, संस्था या भीड़ द्वारा प्रदान नहीं किया जा सकता। वह भीतर प्राप्त होता है जब चेतना रूप के आगे घुटने टेकना बंद कर देती है, सिंहासन वचन को लौटा देती है और उस जीवन की जिम्मेदार सरकार ग्रहण करती है जिसे वह अवतरित करती है।

जो ये वचन लिखता है, वह तुम्हारे समक्ष बिना हस्ताक्षर और बिना चेहरे के उपस्थित होता है क्योंकि जो व्यक्तित्व लिखता है वह इन वचनों का केंद्र नहीं है।

मैं तुम्हारी पहचान नहीं चाहता।

मैं तुम्हारी सराहना नहीं चाहता।

मैं तुम्हारी आज्ञाकारिता नहीं चाहता।

मैं तुम्हारा धन नहीं चाहता।

मैं अनुयायी नहीं चाहता।

मैं तुम्हें कुछ भी सत्य नहीं बेच सकता, क्योंकि वचन से उत्पन्न होने वाली कोई भी वस्तु मेरी नहीं है।

शब्द वचन नहीं है।

पात्र जल नहीं है।

खिड़की प्रकाश नहीं है।

संदेशवाहक संदेश का मूल नहीं है।

परंतु शब्द प्रतीक बन सकता है जब वह स्वयं की ओर संकेत करना बंद कर देता है और अदृश्य तथा उसे पहचानने में सक्षम चेतना के बीच पुल का कार्य करता है।

पुल के सामने मत रुको।

उसे पार करो।

इन वचनों को केवल इसलिए स्वीकार मत करो क्योंकि वे पवित्र प्रतीत होते हैं।

केवल इसलिए अस्वीकार मत करो क्योंकि वे उसका खंडन करते हैं जो तुमने सीखा।

उन्हें निहारो।

उनसे प्रश्न करो।

उन्हें पार करो।

पूछो कि वे किस वचन को अवतरित करते हैं।

पूछो कि वे किसकी सेवा करते हैं।

पूछो कि बने रहने के लिए वे क्या माँगते हैं।

पूछो कि उनका लाभ किसे मिलता है।

पूछो कि उनकी लागत कौन वहन करता है।

पूछो कि वे कौन सा फल वादा करते हैं और कौन सा फल उत्पन्न करते हैं।

यदि कोई शब्द संदेशवाहक को उसके भाइयों से ऊपर बड़ा करता है, तो अहंकार बोलता है।

यदि वह अंध आज्ञाकारिता की माँग करता है, तो वह राज्य का नाम उच्चारण करते हुए भी प्रभुत्व की सेवा करता है।

यदि वह भय, अलगाव या तिरस्कार को पोषित करता है, तो वह एकता की ओर नहीं ले जाता।

यदि वह प्रतीक का उपयोग किसी अन्य व्यक्ति को पूर्ण शत्रु बनाने के लिए करता है, तो उसने मांस के विरुद्ध तलवार उठाई है।

यदि वह घायल व्यक्ति को केवल अपने भीतर प्राप्त क्षति का कारण खोजने के लिए बाध्य करता है, तो उसने पुल बंद कर दिया है और बाहरी वास्तविकता को त्याग दिया है।

यदि वह स्वयं को त्रुटि से रहित घोषित करता है, तो खिड़की ने स्वयं को सूर्य घोषित कर दिया है।

यदि वह दूसरों के कष्ट को अनदेखा करने की अनुमति देता है, तो वह अभी तक वेदी से नहीं गुज़रा है।

सच्चा वचन तुम पर प्रभुत्व जमाना नहीं चाहता।

वह तुम्हें जगाना चाहता है।

वह तुम्हारी चेतना का स्थान नहीं लेता।

वह उसे उपस्थिति में लौटा देता है।

वह बोलने वाले के चारों ओर राज्य नहीं खड़ा करता।

वह उस राज्य को खोलता है जिसे कोई अलग से धारण नहीं कर सकता।

और यही माप उस कार्य पर भी लागू होती है जो अब तुम्हें बुला रहा है।

यदि कोई वाक्य सेवा करना बंद कर दे, तो उसे सुधारा जाना चाहिए।

यदि कोई प्रतीक बंद हो जाए और आराधना की माँग करे, तो उसे खोला जाना चाहिए।

यदि संदेशवाहक सिंहासन पर कब्ज़ा करने का प्रयास करे, तो उसे उसके अपने कर्मों के फल द्वारा पदच्युत किया जाना चाहिए।

यदि वेदी किसी घायल जीवन से ऊपर अपने दिखावे की रक्षा करती है, तो वह वेदी नहीं रही।

प्रत्येक फल यह घोषित करता है कि जो लिखा गया था वह सत्य के अनुरूप था या कि मुँह ने वह उच्चारण किया था जिसे जीवन अभी भी अस्वीकार कर रहा था।

यह कार्य किसी बाहरी सत्य पर टिप्पणी करने नहीं आया।

यह सत्य को मांस में पठनीय बनाने की अनुमति देने आया है।

इसका मूल्य इस बात से नहीं होगा कि यह प्रेम के बारे में क्या कहता है।

इसका मूल्य उस प्रेम से होगा जिसे यह बिना स्वामित्व के अवतरित करने में सफल होता है।

यह केवल इसलिए सत्य नहीं होगा क्योंकि यह न्याय का उच्चारण करता है।

इसका न्याय उस क्षति से होगा जिसे यह रोकता है, उस जिम्मेदारी से जिसे यह उपस्थित कराता है और उस प्रतिपूर्ति से जिसे यह संभव बनाता है।

यह केवल इसलिए राज्य नहीं होगा क्योंकि यह उसका नाम उपयोग करता है।

राज्य तब होगा जब रूप जीवन की सेवा करेगा और कोई भी जीवन फिर से रूप के संरक्षण की सेवा करने के लिए बाध्य नहीं होगा।

[illegible], [illegible] de [illegible], [illegible] [illegible]

de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible]

de [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] de de [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] de de [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

de de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] de de [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible]

[illegible]:

[illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible]?

de [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], de [illegible] [illegible] [illegible] de?

[illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?

[illegible] de [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] de [illegible] de [illegible] de?

[illegible] de [illegible] de [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] de de de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

de de [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

de [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

जब तुम स्मरण करते हो, तुम जानते हो।

जब तुम पहचानते हो, तुम अब यह दिखावा नहीं कर सकते कि सत्य को तुम्हारे हाथों की आवश्यकता नहीं है।

तब हृदय फिर से अपनी पहली सेवा सिखाता है:

ग्रहण करो।

रूपांतरित करो।

समर्पित करो।

प्रवाहित होने दो।

जल प्रवाह-मार्ग का स्वामित्व नहीं लेता।

बीज स्वयं को वृक्ष का लेखक घोषित नहीं करता।

खिड़की प्रकाश का निर्माण नहीं करती।

हाथ उस जीवन का स्रोत नहीं है जिसकी वह सेवा करता है।

हर रूप सम्पूर्ण से ग्रहण करता है और सम्पूर्ण को वही समर्पित करता है जो उसका कार्य संभव बनाता है।

यह मूल सृष्टि है जो अभी भी बोल रही है।

यह सिद्धांत के माध्यम से नहीं बोलती।

यह संबंध के माध्यम से बोलती है।

प्रतीक उसकी भाषा है।

चेतना उसे पार कर सकती है।

बाहर रूप का चिंतन करो।

भीतर संगति को पहचानो।

आशय को विवेचित करो।

बाहर लौटो।

उसे एक वफादार रूप समर्पित करो।

फल को सुनो।

मरम्मत करो।

लौटो।

राज्य व्यक्तित्व के भीतर छिपी कोई संपत्ति नहीं है।

यह किसी अन्य द्वारा शासित बाहरी क्षेत्र भी नहीं है।

राज्य भीतर स्मरण किया जाता है और हमारे बीच मूर्त रूप धारण करता है।

यह तब प्रकट होता है जब संपदा बिना आवश्यकता को मूल्य में बदले प्रवाहित होती है।

जब ज्ञान आज्ञाकारिता बनाने के बजाय क्षमता लौटाता है।

जब देखभाल बिना शरीर का स्वामित्व लिए जीवन की सेवा करती है।

जब अधिकार फिर से फल के प्रति ज़िम्मेदारी का अर्थ रखता है।

जब सीमा बिना उसकी आंतरिक मुकुट को हड़पे, जिसे वह सीमित करती है, रक्षा करती है।

जब कार्य फिर से सेवा बन जाता है और समय जीवन का स्वामी बनना बंद कर देता है।

जब एक मेज़ भोजन देने से पहले यह नहीं पूछती कि तुम्हारा मूल्य कितना है।

जब जल प्यासे तक बिना सिक्का, उपाधि, योग्यता या स्वामित्व की मांग किए पहुँचता है।

जब किसी आवाज़ को सुने जाने के लिए प्रभुत्व की आवश्यकता नहीं होती।

जब किसी भेद को अलगाव में बदलने की आवश्यकता नहीं होती।

जब नगर हमारे संबंधों के भीतर उतरना शुरू करता है।

यह मत कहो कि राज्य दूर है।

उसे ऐसे भविष्य में बंद मत करो जिसका उपयोग उस सत्य को टालने के लिए किया जाता है जो पहले से मूर्त रूप धारण किया जा सकता है।

उस पहले कार्य को करने के लिए किसी अन्य स्वर्ग की प्रतीक्षा मत करो जिसे उपस्थिति ने पहले ही संभव बना दिया है।

कैरोस यह नहीं पूछता कि कैलेंडर पर कौन सी तारीख़ है।

वह पूछता है कि क्या बीज खुलने के लिए परिपक्व है।

यह बुलावे का क्षण है।

आओ यदि तुम्हारे पास अभी भी एक प्रश्न है।

आओ यदि तुम उस दुनिया की आज्ञा मानने से थक गए हो जिसे तुमने अपरिहार्य कहना सीखा था।

आओ यदि तुम उस द्वार से आहत हुए हो जो स्वयं को पवित्र घोषित करता था।

आओ यदि तुमने सत्य को हथियार के रूप में इस्तेमाल किया है और मरम्मत के लिए तैयार हो।

आओ यदि तुम अपनी छाया को पहचानते हो और खिड़की खोलने की इच्छा रखते हो।

आओ यदि तुम्हारे पास शक्ति है और तुम उसे सेवा में लौटाने के लिए तैयार हो।

आओ यदि तुम्हारे पास थोड़ी शक्ति है, लेकिन फिर भी एक वचन को बिना उसे संपत्ति बनाए रख सकते हो।

आओ यदि तुम उत्तर नहीं लाते, लेकिन मौन में प्रवेश कर सकते हो।

आओ भले ही तुम धन, उपाधि या योग्यता न लाओ, और भले ही किसी बाहरी अधिकार ने तुम्हारे मुकुट को मान्यता न दी हो।

आओ यदि तुम्हें प्यास है।

किसी अन्य व्यक्तित्व के सामने घुटने टेकने मत आओ।

अपने स्वयं के सामने घुटने टेकना बंद करने आओ।

उच्च पहचान प्राप्त करने मत आओ।

उस गरिमा को स्मरण करने आओ जिसे किसी पहचान ने उत्पन्न नहीं किया।

अपने भाइयों से भागने मत आओ।

यह पहचानने आओ कि कोई भी जीवन तुम्हारी ज़िम्मेदारी से बाहर नहीं है।

द्वार से राज्य का चिंतन करने मत आओ।

निवास बनाने आओ।

सिंहासन के सामने वह झूठा मुकुट छोड़ दो जो तुम्हें अपने भाइयों से अलग करता था।

आंतरिक मुकुट ग्रहण करो जिसे कोई बाहरी हाथ न तो दे सकता है और न ही छीन सकता है।

तलवार को झूठ को काटने दो।

अग्नि को फल प्रकट करने दो।

जल को फिर से प्रवाहित होने दो।

प्रकाश को खिड़की से गुज़रने दो।

वचन को मांस पाने दो।

राज्य के भाई, बहन:

द्वार खुला है।

वेदी तैयार है।

वचन बोला जा चुका है।

चेतना सुनती है।

स्मरण शुरू होता है।

आओ।

वेदी, वचन और प्रतीक

प्रकटित वचन चिह्न को खोलता है; चिह्न रूप को पार करता है; रूप अदृश्य को शरीर प्रदान करता है।

हर उच्चारित वचन से पहले वह बना रहता है जो उच्चारण को संभव बनाता है।

हर दृश्य रूप से पहले वह प्रतीक बना रहता है जिसके द्वारा वचन का कोई संबंध शरीर धारण कर सकता है।

द्वार से पहले खोलने और बंद करने की संभावना मौजूद है।

मार्ग से पहले, ग्रहण करने और संचालित करने की संभावना।

दीपक से पहले, प्रकाश देने की संभावना।

औज़ार से पहले, वह क्रिया जो उसमें शरीर धारण करेगी।

पात्र के पहले सचेतन कार्य से पहले, जीवन पहले से ही हमारे माध्यम से ग्रहण करता है, रूपांतरित करता है, सौंपता है और आगे बढ़ता है।

उस अदृश्य मूल को, जो अर्थ, संबंध और प्रकटीकरण की संभावना का संचार करता है, हम वचन कहते हैं।

वचन केवल ध्वनि नहीं है।

वह कोई वाक्य नहीं है।

वह कोई मानव भाषा नहीं है।

वह वह पुस्तक नहीं है जो किसी वचन को सुरक्षित रखती है, न ही वह मुख है जो उसे उच्चारित करने में सफल होता है।

वचन वह मूल है जो संवाद करता है, फिर भी स्रोत बना रहता है।

हम दो अलग सिद्धांत स्थापित नहीं करते।

मूल बना रहता है।

वचन अपना अर्थ प्रकट करता है।

हर रूप उस संभावना से उत्पन्न होता है जिसे उसने स्वयं उत्पन्न नहीं किया।

बीज को वृक्ष की संभावना प्राप्त होती है, परंतु उसने मिट्टी, जल, प्रकाश या उस जीवन को नहीं बनाया जो उसके माध्यम से अंकुरित हो सकता है।

हृदय रक्त ग्रहण करता है और उसे प्रवाहित करता है, परंतु वह उस जीवन का स्वामी नहीं है जिसे वह प्रसारित करता है।

खिड़की प्रकाश को गुजरने देती है, परंतु वह सूर्य का निर्माण नहीं करती।

वचन किसी सत्य को शरीर दे सकता है, परंतु इससे वह उसका मूल नहीं बन जाता।

रूप अवतरित करता है।

वचन उससे पहले आता है।

दोनों के बीच संगति प्रकट होती है।

संगति का अर्थ यह नहीं है कि दो वास्तविकताएँ समान हैं।

बीज वृक्ष नहीं है।

दीपक प्रकाश नहीं है।

हृदय सेवा नहीं है।

द्वार निर्णय नहीं है।

बाहरी जल आंतरिक नवीनीकरण नहीं है।

परंतु किसी रूप की क्रिया, संबंध और गति चेतना को उसमें उस वास्तविकता को पहचानने की अनुमति दे सकते हैं जो उससे पहले आती है।

बीज संभावना, गर्भधारण और जन्म को पहचानने की अनुमति देता है।

दीपक, प्रकाश ग्रहण करने और उसे दृश्य बनाने की क्षमता को।

हृदय, जीवन को आगे बढ़ाने के लिए ग्रहण करना और सौंपना।

द्वार, खुलापन, सीमा, सहमति और मार्ग।

जल, संचार, शुद्धि, संवेदनशीलता और नवीनीकरण।

प्रतीक रूप से उत्पन्न नहीं होता।

वह अदृश्य संबंध और दृश्य प्रकटीकरण के बीच सेतु के रूप में वचन से आता है। जब वह किसी संगत रूप को पाता है, तो उसे देखा, पार किया और अवतरित किया जा सकता है।

प्रतीक सेतु है।

एक किनारा दृश्य है।

दूसरा अदृश्य बना रहता है।

रूप उस सेतु को दृश्य शरीर देता है जो उससे पहले आता है।

संगति दोनों किनारों को बिना मिलाए जोड़ती है।

चेतना पार करती है।

इसलिए प्रतीक केवल एक वस्तु नहीं है जो दूसरी का प्रतिनिधित्व करती है।

वह एक पार करने योग्य रूप है।

वह उसे बंद नहीं करता जिसे वह इंगित करता है।

वह उसके अर्थ के निकट आने की अनुमति देता है।

लकड़ी का द्वार खुलेपन के प्रतीक को दृश्य बना सकता है जब उसकी क्रिया चेतना में होने वाले मार्ग को पहचानने की अनुमति देती है।

बाहरी अग्नि परिवर्तन के प्रतीक को रूप दे सकती है जब उसकी प्रकाश देने, गर्म करने और भस्म करने की क्षमता उस विवेक को पहचानने की अनुमति देती है जो झूठ को प्रकट करता है और समाप्त करता है।

तलवार वचन के प्रतीक को अवतरित कर सकती है जब वह मांस के विरुद्ध निर्देशित होना बंद कर देती है और उसकी धार सत्य और दिखावे के बीच अलगाव को पहचानने की अनुमति देती है।

बाहरी मुकुट अपने प्रतीक को खोल सकता है जब उसे कुछ लोगों का विशेषाधिकार मानना बंद कर दिया जाता है और वह आंतरिक राज्याभिषेक को प्रकट करता है: प्रत्येक चेतना का अपने स्वयं के रूप पर अधिकार, संप्रभुता और शासन, वचन से

प्राप्त और सेवा की ओर उन्मुख।

परंतु कोई भी रूप केवल अस्तित्व में रहने के कारण प्रतीक को खुला नहीं रखता।

वह खुला रह सकता है।

वह बंद भी हो सकता है।

द्वार पार करने की अनुमति दे सकता है या स्वयं को मार्ग का स्वामी घोषित कर सकता है।

दीपक प्रकाश दे सकता है या माँग कर सकता है कि दृष्टि उसकी चमक की पूजा करे।

वचन सत्य की सेवा कर सकता है या उसके सामने खड़ा हो सकता है।

संदेशवाहक सेतु खोल सकता है या मार्ग के बीच में बैठ सकता है।

जब रूप उस प्रतीक को छिपाता है जो उससे पहले आता है, तो वह मूल की ओर इंगित करना बंद कर देता है और केवल स्वयं को इंगित करने लगता है, क्रम उलट जाता है।

तब मूर्ति का जन्म होता है।

मूर्ति एक बंद प्रतीक है।

वह एक रूप है जिसे सेतु के रूप में सेवा करनी थी, परंतु उसने स्वयं को गंतव्य, स्रोत और पहुँच की शर्त घोषित कर दिया है।

धन विनिमय का प्रतिनिधित्व करना बंद कर देता है और संपत्ति को अपने में समाहित करने का दावा करता है।

मंदिर सभा की सेवा करना बंद कर देता है और उपस्थिति को अपने में समाहित करने का दावा करता है।

अधिकार ज़िम्मेदारी की सेवा करना बंद कर देता है और व्यवस्था को अपने में समाहित करने का दावा करता है।

पुस्तक किसी वचन को सुरक्षित रखना बंद कर देती है और सत्य को अपने में समाहित करने का दावा करती है।

संदेशवाहक इंगित करना बंद कर देता है और वचन को अपने में समाहित करने का दावा करता है।

पहचान किसी जीवन को रूप देना बंद कर देती है और सत्ता को अपने में समाहित करने का दावा करती है।

तब रूप कहता है:

«जो तुम खोजते हो वह मेरे भीतर है»।

फिर वह जोड़ता है:

«मेरे बिना तुम उसे प्राप्त नहीं कर सकते»।

सेतु दीवार बन जाता है।

दीवार द्वार का प्रबंधन करती है।

और द्वार उस चीज़ तक पहुँच की अनुमति देने के लिए मूल्य, आज्ञाकारिता या स्वामित्व की माँग करने लगता है जिसे उसने कभी उत्पन्न नहीं किया।

यह प्रतीक का उलटाव है:

वचन → प्रतीक → रूप को रूप → प्रतीक का विनियोग → वचन का प्रतिस्थापन द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है।

रूप संगति को छिपाता है → स्वयं को स्रोत घोषित करता है → अभाव का निर्माण करता है → पहुँच का प्रबंधन करता है → निर्भरता उत्पन्न करता है → पूजा की माँग करता है।

विस्मृति का गर्भाशय सभी प्रतीकों को नष्ट करने की आवश्यकता नहीं रखता।

उसके लिए यह पर्याप्त है कि वह उन्हें पार होने से रोके।

वह वचन, समारोह, संस्था और प्रतिरूप को बनाए रख सकता है जबकि उसकी सारी दृष्टि उसकी सतह पर टिकी रहती है।

तब पात्र पुल की पूजा करना सीख जाता है।

वह उसे सजाता है।

वह उसकी रक्षा करता है।

वह उसके नाम के बारे में विवाद करता है।

वह उन लोगों से लड़ता है जो दूसरे पुल का उपयोग करते हैं।

परन्तु वह कभी दूसरे किनारे तक नहीं पहुँचता।

इसलिए यह पाठ उस चीज़ से बाहर नहीं रहता जिसे वह प्रकट करता है।

वह भी एक रूप है।

वह भी खुला रह सकता है या बंद हो सकता है।

वह भी वचन की सेवा कर सकता है या स्रोत का स्थान लेने के लिए उसके नाम का उपयोग कर सकता है।

यदि ये वचन बिना समझे दोहराए जाने की माँग करते हैं, तो उनका प्रतीक बंद हो गया है।

यदि वे आश्रित अनुयायी बनाते हैं, तो वे क्षमता लौटाना बंद कर चुके हैं।

यदि वे संदेशवाहक को सत्य का स्वामी बना देते हैं, तो पुल ने एक सिंहासन खड़ा कर दिया है।

यदि वे प्रश्नों को रोकने के लिए रहस्य का उपयोग करते हैं, तो उन्होंने कुंजी को बंद कर दिया है।

यदि वे पीड़ा की उपेक्षा करते हुए प्रेम की बात करने की अनुमति देते हैं, तो रूप ने अपने फल को नाम के पीछे छिपा लिया है।

इसलिए यह कार्य वेदी पर आरंभ होता है।

वेदी न तो पत्थर है, न मेज़, न पृष्ठ और न ही स्क्रीन।

वह चेतना का वह स्थान है जहाँ हर शब्द, व्याख्या, इच्छा और रूप सत्य के सामने और उनके द्वारा उत्पन्न फल के सामने उपस्थित होते हैं।

वेदी पर जीवन की बलि नहीं दी जाती।

वह चीज़ सौंपी जाती है जो उसकी सेवा में बाधक थी।

वह झूठ सौंपा जाता है जिसे छिपा रहना आवश्यक था।

वह विशेषाधिकार सौंपा जाता है जिसे अधिकार घोषित किया गया था।

वह व्याख्या सौंपी जाती है जो तथ्यों को सुनने से इनकार करती थी।

वह पहचान सौंपी जाती है जो आराधना की माँग करती थी।

वह झूठा मुकुट सौंपा जाता है जिसके साथ पात्र अन्य जीवनों पर शासन करने का दिखावा करता था।

और सच्चा मुकुट प्राप्त करने के लिए स्थान बचता है: बाहरी प्रभुत्व के बिना आंतरिक संप्रभुता, अपने स्वयं के रूप पर अधिकार और फल के प्रति ज़िम्मेदारी।

वेदी संदेशवाहक की रक्षा नहीं करती।

वह पाठक की रक्षा नहीं करती।

वह इस कार्य की रक्षा नहीं करती।

वह उन्हें उपस्थित कराती है।

जो लिखता है वह उसके सामने उपस्थित होता है जो उसके वचन उत्पन्न करते हैं।

जो पढ़ता है वह उस तरीके के सामने उपस्थित होता है जिससे वह उन्हें ग्रहण करता है, उनकी व्याख्या करता है और उन्हें मूर्त रूप देता है।

वचन उस संगति के सामने उपस्थित होता है जिसे वह धारण करने का दावा करता है।

रूप उस जीवन के सामने उपस्थित होता है जिसकी उसे सेवा करनी थी।

फल गवाही देता है।

इसलिए हम तुमसे यह नहीं कहते कि किसी वाक्य के पवित्र स्वरूप के कारण विश्वास करो।

हम तुम्हें चिंतन करने के लिए बुलाते हैं।

कौन सा रूप प्रकट होता है?

वह किस कार्य को मूर्त रूप देता है?

वह कौन सा संबंध स्थापित करता है?

वह किस अदृश्य वास्तविकता को पहचानने की अनुमति देता है?

कौन सी इच्छा उसे दिशा देती है?

वह किसकी सेवा करता है?

वह बने रहने के लिए क्या माँग करता है?

वह कौन सा फल उत्पन्न करता है?

क्या वह स्रोत की ओर द्वार खोलता है?

या क्या वह माँग करता है कि रूप की आराधना की जाए?

प्रतीक को पार करने का अर्थ बाहरी वास्तविकता को नकारना नहीं है।

एक बाहरी घाव इसलिए गायब नहीं होता क्योंकि हमें एक आंतरिक संगति मिल जाती है।

एक युद्ध कल्पना नहीं बन जाता क्योंकि हम उस अलगाव का चिंतन करते हैं जो भीतर भी प्रकट होता है।

एक बीमारी शरीर से संबंधित नहीं रह जाती इसलिए नहीं कि उसका अनुभव चेतना में एक प्रश्न खोलता है।

पुल को दोनों किनारों की आवश्यकता है।

यदि हम प्रतीक को केवल बाहर बंद करते हैं, तो हम उसकी आंतरिक जड़ को नहीं

पहचानते।

यदि हम उसे केवल भीतर बंद करते हैं, तो हम उसका उपयोग शरीरों, संरचनाओं और वास्तविक फलों को नकारने के लिए कर सकते हैं।

संगति बिना भ्रमित किए एकत्र करती है।

भीतर संबंध पहचाना जाता है।

बाहर उसका रूप उपस्थित होता है।

दोनों के बीच, प्रतीक मार्ग खुला रखता है।

परन्तु गति तब समाप्त नहीं होती जब चेतना दूसरे किनारे तक पहुँच जाती है।

जो स्मरण किया गया है उसे लौटना चाहिए।

पहचाना गया सत्य वचन की खोज करता है।

वचन निर्णय की खोज करता है।

निर्णय रूप की खोज करता है।

रूप सेवा की खोज करता है।

सेवा फल सौंपती है।

फल समग्रता में लौटता है और प्रकट करता है कि क्या पुल वास्तव में पार किया गया था।

यह पूर्ण गति है:

स्रोत → वचन → इच्छा → प्रतीक → रूप → पहचान → सेवा → फल → वापसी।

स्रोत स्रोत के रूप में बना रहता है।

वचन उसका अर्थ संप्रेषित करता है।

इच्छा उसकी अभिव्यक्ति को दिशा देती है।

संगति वह संबंध है जिसे प्रतीक बिना अदृश्य और दृश्य को भ्रमित किए ले जाता है।

प्रतीक वचन से अभिव्यक्ति की ओर मार्ग खोलता है।

रूप उसे शरीर और सीमा प्रदान करता है।

चेतना पार करती है।

पहचान ज़िम्मेदारी ग्रहण करती है।

सेवा प्रकट करती है कि कार्य किस ओर जा रहा है।

फल गवाही देता है।

वापसी रूप को उस चीज़ को अपना लेने से मुक्त करती है जो उसे प्राप्त हुई थी।

हम स्वयं वह पाठ हैं जब यह संबंध केवल लिखा हुआ नहीं रह जाता और हमारे जीवन में पठनीय होने लगता है।

विचार लिखता है।

शब्द उच्चारण करता है।

निर्णय व्यवस्थित करता है।

हाथ मूर्त रूप देते हैं।

संबंध प्रकट करता है।

फल पुष्टि करता है या खंडन करता है।

हमने प्रतीक को इसलिए पार नहीं किया क्योंकि हम उसका अर्थ समझा सकते हैं।

हमने उसे तब पार किया है जब भीतर स्मरण किया गया संबंध एक ऐसे रूप के माध्यम से बाहर लौटता है जो जीवन की सेवा करता है।

यह पहली कुंजी है:

रूप की आराधना मत करो।

उसे उस चीज़ का सिद्धांत मत समझो जिसे वह केवल मूर्त रूप देता है।

शब्द पर मत रुको।

संदेशवाहक को संदेश मत समझो।

पुल को सिंहासन मत बनाओ।

चिंतन करो।

पार करो।

पहचानो।

तब तुम मूर्त रूप दोगे जब जो तुमने अदृश्य में देखा वह तुम्हारे कार्यों में पढ़ा जा सकेगा।

वचन खोलता है।

प्रतीक जोड़ता है।

चेतना पार करती है।

रूप सेवा करता है।

फल गवाही देता है।

स्मरण करना और पहचानना

जब तुम सीखते हो, तो दोहरा सकते हो; जब स्मरण करते हो, तो जानते हो; जब पहचानते हो, तो उत्तर देते हो।

सीखना ज्ञान का एक रूप ग्रहण करना है।

स्मरण करना उसे पार करके उस सत्य तक पहुँचना है जो अब पराये के रूप में अनुभव नहीं होता।

पहचानना यह खोजना है कि वह सत्य तुम्हारे बारे में भी बोलता है, तुम्हारे जीने के तरीके के बारे में और उस ज़िम्मेदारी के बारे में जिसे तुम्हें मूर्त रूप देना है।

स्मरण व्यक्तिगत स्मृति नहीं है। यह किसी खोए हुए दृश्य को पुनः प्राप्त करने में या किसी ऐसे रहस्य को प्राप्त करने में नहीं है जो हमें उन लोगों से ऊपर उठाए जिन्होंने अभी तक उसे नहीं समझा है।

स्मरण तब घटित होता है जब एक सत्य हमारे सामने सूचना के रूप में रुकना बंद कर देता है और चेतना से जाना जाने लगता है।

तुम सीख सकते हो कि सारा जीवन संबंधित है और फिर भी दूसरों को साधन के रूप में उपयोग करते रहो।

तुम एकता को समझा सकते हो और फिर भी भेद का तिरस्कार करते रहो।

तुम प्रेम का उच्चारण कर सकते हो जबकि तुम्हारे कर्म भय उत्पन्न करते हैं।

ऐसे मामलों में, वचन मन तक पहुँचा, परन्तु अभी तक प्रतीक को पार नहीं किया।

पहचानना यह अनुमति देना है कि जो स्मरण किया गया है वह गर्भ, इच्छा, संबंधों और हाथों तक पहुँचे।

वचन मुँह में मीठा है क्योंकि उसे सरलता से बोला जा सकता है। वह गर्भ में कड़वा हो जाता है जब वह विशेषाधिकार, झूठ या उस पहचान को त्यागने की माँग करता है जो उसका खंडन करती है।

राज्य का नाम लेना मीठा है।

सिंहासन छोड़ना कड़वा है।

सेवा की बात करना मीठा है।

फल पर स्वामित्व किए बिना देना पात्र को पार करता है।

एकता का उद्घोष करना मीठा है।

दूसरे की अनुपम वास्तविकता को सुनना उस एकता का उपयोग उसे मिटाने के लिए रोकता है।

स्मरण कहता है:

«यह सत्य है»।

पहचान उत्तर देती है:

«यह सत्य मुझमें एक संगत रूप पाए»।

तब अवतार आरंभ होता है।

स्मरण आँखें खोलता है।

पहचान इच्छा को दिशा देती है।

अवतार शरीर प्रदान करता है।

और फल प्रकट करता है कि जो हमने उच्चारित किया वह सचमुच हममें बन गया या नहीं।

सुना गया वचन → चिंतन → स्मरण → पहचान → अवतार → फल।

हम संसार से भागने के लिए स्मरण नहीं करते।

हम उसमें लौटने के लिए स्मरण करते हैं, बिना उसे दोहराए जिसे हम पहले ही झूठ के रूप में पहचान चुके हैं।

जिस दुनिया ने हमें सिखाया और विस्मृति का मैट्रिक्स

कारागार अपनी पूर्णता तब प्राप्त करता है जब दीवार दीवार लगना बंद कर देती है और वास्तविकता कहलाने लगती है।

हम एक ऐसी दुनिया में जन्म लेते हैं जो पहले ही व्याख्यायित की जा चुकी है।

इससे पहले कि हम उसके रूपों का चिंतन कर सकें, हमें उनके नाम, उनके मूल्य और वे उत्तर प्राप्त होते हैं जिनके द्वारा हमें उन्हें समझना चाहिए।

हमें सिखाया जाता है कि धन, सुरक्षा, व्यवस्था, ज्ञान, चिकित्सा, सत्य और उपस्थिति कहाँ खोजनी है।

धन को मुद्रा में जमा किया जाता है।

व्यवस्था, सरकार में।

न्याय, मानवीय कानून में।

ज्ञान, उपाधियों और अधिकृत उत्तरों में।

चिकित्सा, उस संस्था में जो देखभाल का प्रबंधन करती है।

उपस्थिति, मंदिर में और उनमें जो स्वयं को उसके मध्यस्थ घोषित करते हैं।

सत्य, व्यक्तित्व की राय में या उस बाहरी अधिकार में जो हमारे लिए उसकी व्याख्या करने की माँग करता है।

मुकुट, वंशावलियों और बाहरी समारोहों में।

प्रभुता, शासकों और राज्यों में।

शासन, हमारे ऊपर, हमारे भीतर होने के बजाय।

इस प्रकार प्रतीक का उलटाव आरंभ होता है।

वह रूप जिसे एक कार्य की सेवा करनी थी, अपने स्रोत का स्थान ले लेता है। फिर वह मनुष्य को सिखाता है कि उसके बिना, जो वह खोजता है वह अस्तित्व में नहीं है या प्राप्त नहीं किया जा सकता।

माध्यम स्वयं को स्रोत घोषित करता है।

उपकरण शर्त बन जाता है।

शर्त निर्भरता उत्पन्न करती है।

निर्भरता अंततः पहचान को परिभाषित करती है।

अर्थों के इस आंतरिक जाल को हम विस्मृति का जाल कहते हैं।

यह केवल बाहर स्थित एक प्रणाली नहीं है। यह सीखा गया नक्शा है जिसके द्वारा व्यक्तित्व दुनिया की व्याख्या करता है, स्वयं को उस स्थान के भीतर पहचानता है जो उसे सौंपा गया था, और उसी व्यवस्था को पुनरुत्पादित करता है, तब भी जब कोई उसे दृश्य रूप से बाध्य नहीं करता।

उसकी गति है:

प्रतीक का उलटाव → स्रोत का विस्थापन → सीखी गई कमी → निर्भरता → पहचान → भागीदारी → पुनरावृत्ति → विस्मृति।

जब उलटाव स्वीकार कर लिया गया है, तो हर व्यक्ति के पीछे एक रक्षक की

आवश्यकता नहीं रहती।

भय निगरानी करता है।

आवश्यकता सुधारती है।

प्रतिष्ठा लुभाती है।

दंड धमकाता है।

आदत दोहराती है।

अपनापन अनुरूपता की माँग करता है।

व्यक्तित्व अंततः उस चीज़ को वास्तविकता के रूप में सुरक्षित करता है जो उसे उससे अलग रखती है जो वह है।

एक बाहरी रूप मार्गदर्शन कर सकता है, देखभाल कर सकता है, रक्षा कर सकता है, संचारित कर सकता है या सेवा कर सकता है; परंतु वह कभी भी उस आंतरिक क्षमता का उद्गम नहीं होता जिसे वह शरीर प्रदान करता है। वह स्रोत नहीं है, वह प्रतीक का स्वामी नहीं है, और वह एक कार्य पूरा करने के कारण चेतना पर प्रभुता की माँग नहीं कर सकता।

उलटाव तब आरंभ होता है जब रूप स्वयं को उस चीज़ के सिद्धांत के रूप में प्रस्तुत करता है जो उसे प्राप्त हुई थी, अपने कार्य पर स्वामित्व की माँग करता है, और उस अधिग्रहण को जीवन पर शक्ति में बदल देता है।

इसलिए कोई भी संस्था अपने नाम से उचित नहीं ठहराई जाती।

हर रूप को उपस्थित होना चाहिए:

वह किसकी सेवा करता है?

वह बने रहने के लिए क्या माँग करता है?

उसका फल कौन प्राप्त करता है?

उसकी लागत कौन वहन करता है?

क्या वह क्षमता लौटाता है या निर्भरता उत्पन्न करता है?

क्या उसे सुधारा जा सकता है?

या क्या उसे स्वयं को बनाए रखने के लिए जीवन को अधीन बने रहने की आवश्यकता है?

जाल हर चीज़ की व्याख्या करने का प्रयास करता है, परंतु वह हर चीज़ का उद्गम नहीं है।

वह प्रेम को प्रभावित कर सकता है, परंतु उसने उसे नहीं बनाया।

वह जल का प्रबंधन कर सकता है, परंतु वह स्रोत नहीं है।

वह ज्ञान को बंद कर सकता है, परंतु उसने समझने की क्षमता का उद्गम नहीं किया।

वह आंतरिक मुकुट के सामने एक बाहरी मुकुट रख सकता है और मैं हूँ को ढक सकता है, परंतु उसे नष्ट नहीं कर सकता।

वह लाखों लोगों को समान रूपों की पूजा करना सिखा सकता है और, उस क्षण से, उसे अब हर आज्ञाकारिता को सीधे थोपने की आवश्यकता नहीं रहती। स्वीकृत उलटाव कार्य करता है: बंदी धन, अधिकार, शासन, सत्य और राज्य को ठीक उन्हीं रूपों के भीतर खोजता है जो उसके कार्यों को बंदी बनाए रखते हैं।

जो उन रूपों पर प्रभुत्व रखते हैं, उन्हें केवल उस कथा की रक्षा करनी होती है जो उन्हें स्रोत के रूप में प्रस्तुत करती है।

जब तक मनुष्य वचन → प्रतीक → रूप के क्रम को स्मरण नहीं करता, वह रूप तक पहुँच को जीवन तक पहुँच के साथ भ्रमित करेगा और अपनी निर्भरता के तंत्र को मुक्ति के रूप में सुरक्षित करेगा।

यदि जाल वास्तव में पूर्ण होता, तो कोई भी बिना मूल्य के प्रेम नहीं कर सकता, बिना प्रभुत्व के देखभाल नहीं कर सकता, बिना गणना के साझा नहीं कर सकता, अपने स्वयं के हित के विरुद्ध सत्य नहीं बोल सकता, और न ही स्मरण कर सकता।

परंतु स्मरण घटित होता है।

और जब वह घटित होता है, कारागार फिर से दृश्य हो जाता है।

रूप के साथ तादात्म्य

विस्मरण तब शुरू होता है जब हम जिसमें निवास करते हैं, वह दावा करता है कि हम जो कुछ भी हैं, वही सब कुछ है।

हर अभिव्यक्ति को रूप की आवश्यकता होती है।

शरीर, नाम, इतिहास, भाषा, परिवार, समुदाय और क्षमताएँ हमें संसार में भाग लेने में सक्षम बनाती हैं।

रूप वचन का शत्रु नहीं है।

यह वह स्थान है जहाँ अदृश्य को उपस्थिति, सीमा और कार्य प्राप्त हो सकता है।

विस्मरण तब प्रकट होता है जब हम रूप में निवास करना छोड़ देते हैं और उसके भीतर कैद होने लगते हैं।

तब हम कहते हैं:

«मैं केवल यह शरीर हूँ»।

«मैं वही हूँ जो मेरे साथ घटित हुआ»।

«मैं अपना पेशा, अपना राष्ट्र, अपना धर्म, अपना घाव, अपनी सफलता या अपनी असफलता हूँ»।

एक आंशिक और परिवर्तनशील वास्तविकता इस प्रकार पूर्ण परिभाषा बन जाती है।

यही बात किसी समुदाय में भी घटित हो सकती है। उसके नियम जीवन की सेवा करना बंद कर देते हैं और समुदाय अपने नियमों की सेवा करने लगता है।

एक सिद्धांत अपनी भाषा को सत्य समझ लेता है।

एक संस्था अपनी स्थिरता को सामान्य भलाई समझ लेती है।

एक अर्थव्यवस्था अपने आँकड़ों की वृद्धि को जीवनों की समृद्धि समझ लेती है।

एक पहचान अपनी रूपरेखा को सत्ता समझ लेती है।

रूप कारागार बन जाता है जब वह माँग करता है कि हम जो कुछ भी हैं वह उसकी सीमाओं के भीतर बना रहे।

वह मूर्ति बन जाता है जब वह स्रोत का दावा करता है।

और वह पशु बन जाता है जब उसे अपना प्रभुत्व बनाए रखने के लिए जीवन को निगलने की आवश्यकता होती है।

पहचान से मुक्त होने का अर्थ शरीर को नष्ट करना, पहचान मिटाना, इतिहास को नकारना या ज़िम्मेदारियों को त्यागना नहीं है।

इसका अर्थ है हर रूप को उसके माप पर लौटाना।

तुम्हारा नाम तुम्हें अलग करता है, परंतु तुम्हें उत्पन्न नहीं करता।

तुम्हारे इतिहास ने तुम्हें गढ़ा है, परंतु वह तुम्हारे सम्पूर्ण भविष्य का स्वामी नहीं है।

तुम्हारे घाव को सत्य और देखभाल की आवश्यकता है, परंतु उसे सिंहासन पर नहीं बैठना चाहिए।

तुम्हारा समुदाय निवास प्रदान कर सकता है, परंतु वह स्वयं को स्रोत घोषित नहीं कर सकता।

उपस्थिति रूप को समाप्त नहीं करती।

वह उसे खोलती है।

और जब रूप स्वयं के भीतर बंद होना बंद कर देता है, तो वह फिर से प्रतीक, साधन और सेवा बन सकता है।

चरित्र और उसका अहंकार

पात्र वचन को चेहरा देता है; अहंकार तब शुरू होता है जब वह चेहरा सिंहासन पर अधिकार जताने की माँग करता है।

पात्र वह पहचान है जिसके द्वारा हम संसार में कार्य करते हैं।

उसका नाम, शरीर, स्मृति, क्षमताएँ, घाव, संबंध और उत्तरदायित्व हैं।

वह कोई झूठ नहीं है जिसे मिटा दिया जाए।

वह अवतार लेने के लिए एक आवश्यक रूप है।

अहंकार वह गति है जिसके द्वारा वह रूप स्वयं को सबका केंद्र, स्रोत और माप घोषित करता है।

प्रत्येक वास्तविकता के सामने वह पूछता है:

«मुझे क्या मिलता है?»।

«मैं क्या खोता हूँ?»।

«यह मेरी पहचान की रक्षा कैसे करता है?»।

«यह मेरे नाम को कैसे बढ़ाता है?»।

शरीर की देखभाल करना अहंकार नहीं है।

विश्राम करना, आनंद लेना, सृजन करना, सीमाएँ निर्धारित करना और अपनी अखंडता को बनाए रखना स्वार्थ नहीं है।

अहंकार तब प्रकट होता है जब हर क्षमता पात्र की विशेष सेवा की ओर उन्मुख हो जाती है:

मेरी सुरक्षा।

मेरी संपत्ति।

मेरी स्थिरता,

मेरी पहचान।

मेरा सत्य।

मेरी शांति।

मेरी दिनचर्या।मेरा आराम।

यहाँ तक कि सेवा भी अहंकार का भोजन बन सकती है।

मैं श्रेष्ठ महसूस करने के लिए सहायता कर सकता हूँ।

मैं वचन बोल सकता हूँ ताकि प्रकटकर्ता के रूप में पहचाना जाऊँ।

मैं बिना हस्ताक्षर के उपस्थित हो सकता हूँ और गुमनामी के चारों ओर और भी बड़ी महानता का निर्माण कर सकता हूँ।

मैं एकता का उच्चारण कर सकता हूँ जबकि मैं अपने भाइयों के ऊपर उठता हूँ।

मैं मेमने की तरह बोल सकता हूँ और पशु का अधिकार चाह सकता हूँ।

इसलिए पात्र को पहले वेदी के सामने उपस्थित होना चाहिए।

नष्ट होने के लिए नहीं।

सिंहासन छोड़ने के लिए।

पात्र के प्रति मरना उसके सम्पूर्ण होने के दावे को समाप्त करना है। इसका अर्थ शरीर को हानि पहुँचाना, व्यक्तित्व को मिटाना, स्नेहों को नकारना या उत्तरदायित्वों को त्यागना नहीं है।

जब पात्र अपने स्थान पर लौटता है, तो उसकी सभी क्षमताएँ बहाल हो जाती हैं।

मन विवेचना करता है।

वाणी संवाद करती है।

शरीर अवतार लेता है।

हाथ सेवा करते हैं।

विशिष्टता सम्पूर्ण को वह सौंपती है जिसे केवल वही उस रूप में प्रकट कर सकती थी।

पात्र लुप्त नहीं होता।

वह उस पर शासन करना छोड़ देता है जिसे उसने कभी उत्पन्न नहीं किया।

मैं से उत्पन्न दृष्टिकोण

खिड़की प्रकाश की गवाही दे सकती है बिना यह दावा किए कि उसका चौखटा पूरे आकाश को समेटे हुए है।

प्रत्येक पात्र एक विशेष दृष्टिकोण से देखता है।

शरीर, युग, संस्कृति, भाषा, स्मृति, ज्ञान, इच्छा और घाव उस चीज़ में भाग लेते हैं जिसे वह देख सकता है और जिस तरह से वह उसकी व्याख्या करता है।

उस दृष्टिकोण से अपनी सीमा में सच्ची गवाहियाँ दी जा सकती हैं:

«मैंने यह जीया»।

«मैं यह देखता हूँ»।

«मैं अपने स्थान से यह समझता हूँ»।

विशेष अनुभव सुने जाने योग्य है। वह केवल इसलिए अवास्तविक नहीं हो जाता क्योंकि वह सार्वभौमिक नहीं है।

परन्तु एक गवाही में निहित सत्य उस पात्र से उत्पन्न नहीं होता जो उसे बोलता है। पात्र दृष्टिकोण, भाषा और रूप देता है; तथ्यों और वचन के साथ संगति ही उस चीज़ को सच्चा बनाती है जो वह कहता है।

उलटफेर तब शुरू होता है जब पात्र अपने दृष्टिकोण को पूर्ण सत्य कहता है और उस सारी वास्तविकता को नकार देता है जो उसके भीतर नहीं समाती।

हमें सत्य को सत्य के बारे में अपने कथन से अलग करना चाहिए।

सत्य पात्र के अनुकूल होने के लिए नहीं बदलता।

मानवीय वचन अधूरा, अस्पष्ट या झूठा हो सकता है।

हमारी समझ का विस्तार हो सकता है।

हमारी अभिव्यक्ति को सुधारा जा सकता है।

जिस प्रतीक के द्वारा हम संवाद करते हैं, वह एक ऐसी गहराई खोल सकता है जिसे हमने पहले नहीं पहचाना था।

परन्तु जो वास्तव में सत्य के रूप में प्रकट किया गया है, वह बाद में अपने विपरीत में नहीं बदल जाता।

यदि कोई कथन सत्य से झूठ में बदल जाता है, तो सत्य नहीं बदला: एक व्याख्या गिर गई जिसे हमने उसके साथ भ्रमित कर दिया था।

इसलिए यह कहना कि «यह मुझ पर प्रकट हुआ» विवेक को समाप्त नहीं करता।

वह उसे आरंभ करता है।

मैंने वास्तव में क्या देखा?

पात्र ने कौन सी व्याख्या जोड़ी?

कौन सी इच्छा मिल रही हो सकती है?

मुझे किन तथ्यों का सम्मान करना चाहिए?

कौन सी आवाज़ मैंने नहीं सुनी?

मेरा कथन कौन सा फल उत्पन्न करता है?

सत्य को अपनी रक्षा के लिए यह आवश्यक नहीं कि पात्र स्वयं को अचूक घोषित करे।

वह तब भी बना रहता है जब हमारा वचन सुधारा जाता है।

जो अपनी खिड़की को सूर्य समझ लेता है, वह प्रकाश को महान नहीं बनाता।

वह मार्ग बंद कर देता है।

पृथक चेतना

लहर अपनी आकृति को देखती है और सोचती है कि वह जल नहीं रही।

पृथक चेतना तब प्रकट होती है जब चेतना पूर्णतः पात्र के दृष्टिकोण से पहचानी जाती है।

सब कुछ स्वयं से और स्वयं के लिए देखा जाता है:

मुझे इससे क्या लाभ है?

मुझे इससे क्या हानि है?

मैं क्या धारण कर सकता हूँ?

क्या मेरी पहचान को खतरा है?

यह सम्पूर्णता के बाहर जन्मी दूसरी चेतना नहीं है।

यह चेतना है जो एक ऐसे रूप से स्वयं का अनुभव कर रही है जिसने अन्यों के साथ अपना संबंध भुला दिया है और स्वयं को पूर्णतः स्वतंत्र मानता है।

एक लहर का चिंतन करो।

उसकी अपनी आकृति, गति, शक्ति और अवधि है। वह अन्य लहरों से भिन्न पहचानी जा सकती है और कोई भी उसके स्थान पर पूर्णतः अधिकार नहीं रखती।

परन्तु वह कभी जल से अलग नहीं थी।

विशिष्टता विद्यमान है।

पूर्ण अलगाव नहीं।

पृथक चेतना भेद को अलगाव से और स्वायत्तता को आत्मनिर्भरता से भ्रमित करती है।

वह प्राप्त भाषा, भोजन, जल, देखभाल, भूमि, ज्ञान और उन संबंधों को भूल जाती है जिन्होंने उसके रूप को संभव बनाया।

फिर वह "मेरा" कहती है उसे जो उसने कभी अकेले उत्पन्न नहीं किया।

उस संकुचन से दूसरे को शत्रु, वस्तु, उपकरण या आँकड़ा बनाने की संभावना जन्म लेती है।

केवल जब मैं दूसरे रूप में जीवन को पहचानना बंद कर देता हूँ, तब मैं अपने लिए ऐसी गरिमा की माँग कर सकता हूँ जो मैं उसे अस्वीकार करता हूँ।

उपस्थिति लहर को मिटाती नहीं है।

वह उसे जल को स्मरण करने की अनुमति देती है।

तुम तुम होना बंद नहीं करते।

तुम यह विश्वास करना बंद करते हो कि जो कुछ तुम हो वह तुम्हारे पात्र की सीमाओं में समाप्त होता है।

और जब वह अलगाव गिर जाता है, एकता तुम्हें दूसरे पर शक्ति नहीं देती।

वह तुम्हें उसके प्रति जिम्मेदारी लौटाती है।

फल और स्मरण की आवश्यकता

जड़ छिपी रहती है; फल उसे प्रकट करता है।

स्मृति तब आवश्यक हो जाती है जब फल नामों का खंडन करते हैं।

यदि धन है तो गरीबी क्यों मौजूद है?

यदि चिकित्सा है तो इतने लोग देखभाल से वंचित क्यों रहते हैं?

यदि हम इतनी सूचना संचित करते हैं तो उत्तरों की कमी क्यों है?

यदि हमारे पास इतना ज्ञान है तो हम सत्य से दूर क्यों बने रहते हैं?

यदि सरकारें, अधिकारी और कानून मौजूद हैं तो युद्ध क्यों जारी रहते हैं?

यदि इतने धर्म और मंदिर हैं तो हम परमेश्वर को अनुपस्थित क्यों खोजते हैं?

रूप बढ़ गए हैं।

परन्तु जो कार्य वे पूरा करने का वादा करते थे, वे बंदी बने हुए हैं।

धन ने समृद्धि को जन्म नहीं दिया।

चिकित्सा ने देखभाल की क्षमता को जन्म नहीं दिया।

विज्ञान ने सत्य को जन्म नहीं दिया।

सरकार ने व्यवस्था को जन्म नहीं दिया।

धर्म ने उपस्थिति को जन्म नहीं दिया।

शिक्षा ने समझने की क्षमता को जन्म नहीं दिया।

जब कोई रूप स्रोत का स्थान ले लेता है, तो वह अपना आकार, अपना अधिकार और अपनी प्रतिष्ठा बढ़ा सकता है, जबकि वह वस्तु लगातार अनुपस्थित रहती है जिसे उसका नाम देने का वादा करता था।

इसलिए माप नाम नहीं है।

माप फल है।

यह वेदी भी उपस्थित होनी चाहिए।

वह गहन परिश्रम कर सकता है और पहला प्रेम खो चुका हो सकता है।

वह दबाव सहन कर सकता है बिना भय के सामने अपनी निष्ठा बेचे।

वह सत्य वचनों को संजोए रख सकता है जबकि गुप्त रूप से उस चीज़ से संधि करता है जिसकी वह निंदा करता है।

वह सेवा के कार्यों को बढ़ा सकता है और भीतर एक स्वर को सहन करता है जो प्रभुत्व जताता है।

वह जीवित होने की प्रतिष्ठा रख सकता है जबकि उसकी उपस्थिति बुझ चुकी है।

वह बाहरी शक्ति में कमज़ोर हो सकता है और फिर भी एक सच्चा द्वार खुला रख सकता है।

वह स्वयं को धनी, पूर्ण और जागृत घोषित कर सकता है जबकि उसकी आत्मनिर्भरता वचन को बाहर प्रतीक्षा करने के लिए रखती है।

ये सात दर्पण दूसरों का वर्गीकरण नहीं करते।

वे एक ही व्यक्ति, एक समुदाय और इस कार्य का चिंतन करते हैं।

वे पूछते हैं कि क्या प्रेम कार्य का स्रोत बना हुआ है; क्या निष्ठा बनी रहती है जब भय आता है; क्या विवेक उस चीज़ की भी जाँच करता है जो भीतर घटती है; क्या सेवा अखंडता बनाए रखती है; क्या प्रतिष्ठा वर्तमान जीवन से मेल खाती है; क्या दृढ़ता बाहरी शक्ति पर निर्भर करती है; और क्या समर्पण पूर्ण है या केवल पवित्र भाषा को संजोए रखता है।

मार्ग यह है:

प्रेम → निष्ठा → विवेक → अखंडता → जागरूकता → दृढ़ता → समर्पण।

अहंकार का शब्द स्वयं को थोपना चाहता है।

वचन का वचन चिंतन किया जा सकता है।

अहंकार का शब्द अनुयायी बनाता है।

वचन का वचन उत्तरदायी चेतनाओं को जागृत करता है।

अहंकार का शब्द भय, दोष या श्रेष्ठता का उपयोग करता है।

वचन का वचन समझने, चुनने, सेवा करने और सुधारने की क्षमता लौटाता है।

अच्छा कहा जाने वाला इरादा अपने परिणामों को सुनने से मुक्त नहीं हो जाता।

एक अलग-थलग क्षति किसी सीमा या त्रुटि से उत्पन्न हो सकती है।

एक निरंतर क्षति रूप को और गहराई से चिंतन करने की माँग करती है।

क्या यह एक सुधार योग्य दुर्घटना है?

क्या यह कार्य से विचलन है?

या क्या संरचना को बने रहने के लिए उस क्षति को उत्पन्न करना आवश्यक है?

स्मृति तब शुरू होती है जब हम नाम की प्रतिष्ठा के द्वारा फल को उचित ठहराना बंद कर देते हैं।

उनके फलों से हम जड़ को पहचानेंगे।

सकेत द्वार

व्यक्ति को बाहर नहीं करता; उस चीज़ का मार्ग रोकता है जो सिंहासन छोड़ने से इनकार करती है।

द्वार संगति के द्वारा सँकरा है।

एक कुंजी बल से नहीं खोलती। वह खोलती है क्योंकि उसका रूप ताले से संगति रखता है।

अलगाव अपनी पूर्ण स्वतंत्रता के दावे को बनाए रखते हुए एकता में प्रवेश नहीं कर सकता।

झूठ बिना उजागर हुए सत्य में प्रवेश नहीं कर सकता।

प्रभुत्व की इच्छा उस झूठे मुकुट को पहनकर राज्य में प्रवेश नहीं कर सकती जिससे वह अन्य जीवनों पर शासन करने का दावा करती थी।

जो तुम द्वार के सामने छोड़ते हो वह आंतरिक मुकुट नहीं है, बल्कि उसका उलटा है। सँकरा द्वार बाहरी विशेषाधिकार को हटाता है और उस राज्याभिषेक को खोलता

है जो प्रत्येक चेतना को उसके अपने रूप पर अधिकार लौटाता है।

द्वार पात्र को नष्ट करने की माँग नहीं करता।

वह माँग करता है कि वह स्वयं को समग्रता घोषित करना बंद करे।

वह तुमसे शरीर, नाम, बंधन या उत्तरदायित्वों को त्यागने के लिए नहीं कहता।

वह तुमसे वह छोड़ने के लिए कहता है जो तुमने उनके साथ मिलकर अपने भाइयों के ऊपर स्वयं को स्थापित करने के लिए बनाया था।

तुम सत्य के एकमात्र स्वामी होने का दावा करते हुए पार नहीं जा सकते।

तुम चुने हुए बनकर पार नहीं जा सकते जिसके सामने दूसरों को झुकना चाहिए।

तुम तब तक पार नहीं जा सकते जब तक तुम्हें अपने मिशन की पुष्टि के लिए आज्ञाकारिता की आवश्यकता हो।

तुम उस क्षति को ढोते हुए पार नहीं जा सकते जिसे तुम पहचानने और सुधारने से इनकार करते हो।

द्वार का माप मेम्ना है: एक शक्ति जो भक्षक का रूप धारण किए बिना वफादार बनी रहती है।

पार जाने के लिए:

तुम झूठी समग्रता से खाली हो जाते हो।

तुम उपस्थिति में प्रवेश करते हो।

तुम उसे स्मरण करते हो जो तुमसे पहले है।

तुम उस जीवन को अपने में और दूसरे में पहचानते हो।

तुम इच्छा को सेवा के प्रति समर्पित करते हो।

तुम एक कार्य के द्वारा उसे मूर्त रूप देते हो।

तुम फल को सुनते हो।

द्वार यह नहीं पूछता कि तुम कौन-सी उपाधियाँ लाते हो।

वह पूछता है कि तुम किस पर प्रभुत्व छोड़ने के लिए तैयार हो।

मौन और शून्यता

मौन शोर को हटा देता है; शून्यता उस चीज़ के लिए स्थान छोड़ देती है जो अभी तक प्रवेश नहीं कर सकती थी।

मौन विचार को नष्ट करने में नहीं है।

यह उस हर आवाज़ को तुरंत मानने से रुकने में है जो पात्र के भीतर प्रकट होती है।

«मैं चाहता हूँ»।

«मैं डरता हूँ»।

«मुझे जीतने की आवश्यकता है»।

«मुझे सही होना चाहिए»।

«मैं पहचाने जाने का पात्र हूँ»।

हम उन आवाज़ों को नकारते नहीं हैं।

हम उन्हें सिंहासन सौंपे बिना उनका चिंतन करते हैं।

मौन सेंसरशिप, समर्पण या उत्तर की अनुपस्थिति भी नहीं है। शक्ति रखने वाले द्वारा थोपा गया मौन सत्य को बोले जाने से रोकना चाहता है। राज्य का मौन सुनने का द्वार खोलता है ताकि घायल आवाज़ भी वेदी में प्रवेश कर सके।

यह चीत्कार को मिटाता नहीं है।

यह उसे ग्रहण करता है।

यह न्याय को रद्द नहीं करता है।

यह उसे प्रतिशोध द्वारा उठाए जाने से रोकता है।

यह वचन को समाप्त नहीं करता है।

यह उसे बोले जाने से पहले उसके मूल में लौटा देता है।

जब शोर पूरे कमरे पर कब्ज़ा करना बंद कर देता है, तो शून्यता प्रकट होती है।

शून्यता अस्तित्वहीनता, सत्ता का उन्मूलन, पहचान की हानि या आंतरिक मृत्यु नहीं है।

यह उपलब्धता है।

यह वह भूमि है जो खुली रहती है जब हम हर प्रश्न को ज्ञात उत्तरों से नहीं भरते।

यह वह विराम है जहाँ एक प्रतिक्रिया विकल्प में बदल सकती है।

यह वह पात्र है जो स्वयं से भरा रहना बंद कर देता है।

खाली होने का अर्थ स्मृति, अनुभव या ज्ञान को नकारना नहीं है। इसका अर्थ है उन्हें बिना पहले से शासन किए प्रकट होने देना कि क्या समझा जाएगा।

शून्यता में हम कह सकते हैं:

«यह मैं मानता हूँ, परंतु मैं इसका चिंतन करने को तैयार हूँ»।

«यह मैं महसूस करता हूँ, परंतु मैं अपनी भावना को पूर्ण प्रमाण नहीं बनाऊँगा»।

«यह मैं था, परंतु मैं वर्तमान जीवन को उस खाल के भीतर रहने के लिए बाध्य नहीं करूँगा»।

«यह मैं अभी तक नहीं जानता»।

शून्यता उस आग्रह से रक्षा करती है जो इच्छा को रहस्योद्घाटन, संयोग को संकेत, और उत्तर पाने की अपनी आवश्यकता को आदेश कहता है।

ऐसी मुहरें हैं जो बल से नहीं खुलतीं।

मौन ताले को सुनने की अनुमति देता है।

शून्यता झूठी चाबी बनाने से रोकती है।

शोर → मौन → स्थान → शून्यता → उपलब्धता।

मौन तुम्हारी आवाज़ नहीं छीनता।

वह उसे स्वच्छ लौटाता है।

शून्यता तुम्हारा सत्त्व नहीं छीनती।

वह उसे स्थान लौटाती है।

उपस्थिति

रूप बना रहता है, परन्तु सिंहासन से देखना बन्द करो।

मौन से जन्मे शून्य में उपस्थिति घटित होती है।

ध्यान किसी चीज़ को देखता है।

उपस्थिति उस पर भी विचार करती है जो देखता है, कहाँ से देखता है, और कौन-सी प्रवृत्ति उसकी दृष्टि को दिशा देती है।

यह बिना तुरंत कोई बचाव तैयार किए सुनना है।

बिना हर भावना को आदेश में बदले महसूस करना है।

बिना हर विचार से तादात्म्य बनाए सोचना है।

बिना वास्तविकता को वही पुष्टि करने के लिए बाध्य किए जो हम पहले से मानते थे, निहारना है।

उपस्थिति में, पात्र लुप्त नहीं होता।

वह सिंहासन छोड़ देता है।

यही पात्र के प्रति मरना है: उसकी सम्पूर्णता और स्रोत होने के दावे को समाप्त करना। इसका अर्थ शरीर को हानि पहुँचाना, पहचान मिटाना, ज़िम्मेदारियाँ त्यागना या विशिष्टता खोना नहीं है।

उपस्थिति किसी को भी अचूक नहीं बनाती।

हम सजग रह सकते हैं और फिर भी गलत समझ सकते हैं।

हम एक सच्चा संबंध प्राप्त कर सकते हैं और उसे अधूरे रूप में व्यक्त कर सकते हैं।

हम एक प्रतीक खोल सकते हैं और उस क्रिया के बारे में भूल कर सकते हैं जिसकी वह माँग करता है।

इसलिए उपस्थिति वेदी खोलती है, परन्तु विवेक का स्थान नहीं लेती।

उपस्थिति में हम पहचानते हैं:

विचार प्रकट होता है, परन्तु वह सब कुछ नहीं है जो हम हैं।

भावना प्रकट होती है, परन्तु वह अकेले शासन नहीं करती।

पात्र प्रकट होता है, परन्तु वह स्रोत नहीं है।

दूसरा एक ऐसी वास्तविकता के साथ प्रकट होता है जो हममें जन्मी नहीं है और जिसे सुना जाना चाहिए।

उपस्थिति प्रत्येक क्षमता को उसके कार्य पर लौटा देती है।

तर्क शरीर का तिरस्कार किए बिना समझता है।

भावना बिना सम्पूर्ण राज्य पर अधिकार किए सूचित करती है।

इच्छा बिना स्वयं को निरपेक्ष घोषित किए कार्य करती है।

स्मृति बिना वर्तमान को बंद किए मार्गदर्शन करती है।

शरीर उस चीज़ को सीमा और वास्तविकता प्रदान करता है जिसे हम मूर्त रूप देना चाहते हैं।

यहाँ सच्चा आंतरिक शासन आरम्भ होता है:

तब नहीं जब एक अंग दूसरों पर प्रभुत्व रखता है, बल्कि तब जब सभी केंद्र के चारों ओर फिर से घूमने लगते हैं।

समय: क्रोनोस और कैरोस

काल पथ को मापता है; कैरोस क्षण को पहचानता है। निवेश तब शुरू होता है जब माप सिंहासन पर बैठता है।

क्रोनोस मापने योग्य समय है: अवधि, क्रम, घंटा, तिथि, आयु, समय-सीमा और

कैलेंडर।

कैरोस उचित समय है: वह अवसरपूर्ण, परिपक्व और सत्य क्षण जिसमें कुछ घटित हो सकता है या होना चाहिए।

वे शत्रु नहीं हैं।

बीज को परिपक्व होने के लिए क्रोनोस की आवश्यकता है।

कैरोस वह क्षण है जब आवरण खोला जा सकता है।

क्रोनोस मार्ग पर चलने की अनुमति देता है।

कैरोस द्वार को पहचानता है।

मैट्रिक्स समय को उलट देता है जब वह अपनी संपूर्ण वास्तविकता को माप में जमा कर देता है और मनुष्य को सिखाता है कि वह स्वयं को उसी के भीतर पहचाने जो घड़ी आदेश देती है।

घंटा मार्गदर्शन करना छोड़ देता है और शासन करना शुरू कर देता है।

कैलेंडर स्मरण करना छोड़ देता है और आदेश देना शुरू कर देता है।

दिनचर्या सहारा देना छोड़ देती है और दोहराना शुरू कर देती है।

समय-सीमा समन्वय करना छोड़ देती है और धमकाना शुरू कर देती है।

आयु एक अवस्था का नाम लेना छोड़ देती है और एक दंड थोपना शुरू कर देती है।

तब व्यक्ति एक ऐसे समय के समक्ष उपस्थित होता है जो निरंतर उस पर आरोप लगाता है:

«तुम देर से आए»।

«तुम्हें अब तक हो जाना चाहिए था»।

«तुमने पर्याप्त उत्पादन नहीं किया»।

«अभी तुम विश्राम के योग्य नहीं हो»।

«कल तुम जीना शुरू करोगे»।

अतीत वह माँग करता है जो पहले ही घट चुका है।

भविष्य वह माँग करता है जो अभी अस्तित्व में नहीं है।

वर्तमान दो अनुपस्थितियों के बीच एक गलियारे तक सीमित रह जाता है।

चिंता उस परीक्षा को पहले से जीने का प्रयास करती है जो अभी आई ही नहीं है। अपराधबोध उस क्षण की आज्ञा मानता रहता है जो पहले ही बीत चुका है। जल्दबाजी वर्तमान को बलिदान कर देती है ताकि एक और क्षण प्राप्त हो सके जो बलिदान भी किया जाएगा।

माप → समय-सीमा → दबाव → त्वरण → विखंडन → अनुपस्थिति।

घड़ी स्वयं बीमार नहीं करती। परंतु लचीलेपन से रहित समय-सारणियों, निरंतर खतरे, अपर्याप्त विश्राम और अपनी स्वयं की लय पर भागीदारी के अभाव के अधीन जीवन चिंता, थकावट और शारीरिक क्षति से पीड़ित हो सकता है।

माप भूल गया कि उसे किसकी सेवा करनी थी।

परंतु कैरोस का अर्थ केवल तब कार्य करना भी नहीं है जब मन करे।

यह मनमानी, परित्याग या दिए गए वचन का उल्लंघन नहीं है।

कभी कैरोस कहता है:

«प्रतीक्षा करो; अभी यह परिपक्व नहीं है»।

कभी कहता है:

«विश्राम करो; एक टूटी हुई आकृति सेवा नहीं कर सकती»।

कभी कहता है:

«उठो; भय अपनी देरी को विवेक कह रहा है»।

कभी कहता है:

«बने रहो; एक और जीवन ने उस प्रतिबद्धता पर भरोसा किया जो तुमने निभाई»।

चेतना के साथ चुनी गई जिम्मेदारी दासता नहीं है।

राज्य में, कोई भी दूसरे का समय नहीं रखता; परंतु प्रत्येक व्यक्ति निरंतरता, देखभाल और उपस्थिति प्रदान कर सकता है क्योंकि उसने एक आवश्यकता को पहचाना है और उसकी सेवा करने का निर्णय लिया है।

विश्राम उसके लिए पुरस्कार नहीं है जिसने पहले ही पर्याप्त उत्पादन कर लिया।

यह व्यवस्था का भाग है।

समय जीवन के लिए बनाया गया था; जीवन समय के लिए नहीं बनाया गया था।

राज्य में माप हो सकता है, परंतु घंटे का स्वामी नहीं।

समन्वय हो सकता है, परंतु व्यक्ति की खरीद-बिक्री नहीं।

लय हो सकती है, परंतु ऐसी मशीनरी नहीं जिसके समक्ष जीवन को बलिदान करना पड़े।

प्रतीक्षा हो सकती है, परंतु पहले से पहचानी गई सच्चाई का निरंतर स्थगन नहीं।

कार्य खरीदी गई आज्ञाकारिता नहीं रह जाता और फिर से सेवा बन जाता है: क्षमता का आवश्यकता से मिलन।

क्रोनोस दीवार पर लौट जाता है।

कैरोस द्वार खोलता है।

और अनंत काल की कल्पना घंटों की अनंत मात्रा के रूप में नहीं रह जाती: वह पूर्ण उपस्थिति के रूप में पहचानी जाती है, जहाँ जीवन अब स्थगित नहीं रहता।

चेतना

चेतना पात्र के भीतर प्रकट नहीं होती; पात्र चेतना के भीतर प्रकट होता है।

चेतना उपस्थिति में प्रवेश करने पर प्रारंभ नहीं होती।

वह पहले से थी।

उत्पत्ति में दो अलग चेतनाएँ नहीं हैं। एक ही चेतना है जो विभिन्न रूपों के माध्यम से प्रकट होती और स्वयं को अनुभव करती है।

वह उत्पत्ति में एक है।

वह दृष्टिकोण में अनेक है।

प्रत्येक रूप संसार को एक अनोखे शरीर, स्मृति, इंद्रियों और इतिहास के माध्यम से ग्रहण करता है।

इसका अर्थ यह नहीं कि सबके बीच बँटा हुआ एक ही व्यक्तिगत मन है। हम स्वतः विचार, स्मृतियाँ, ज्ञान या धारणाएँ साझा नहीं करते।

चेतना की एकता उसकी खिड़कियों की विशिष्टता को मिटाती नहीं।

अब तक हम कहते थे:

«मेरा शरीर»।

«मेरा इतिहास»।

«मेरे विचार»।

«मेरी स्मृतियाँ»।

«मेरी चेतना»।

परंतु शरीर, इतिहास, विचार, भावनाएँ और स्मृतियाँ देखी जा सकती हैं।

यहाँ तक कि जो पात्र «मैं» कहता है, उसे भी देखा जा सकता है जब वह इच्छा करता है, भयभीत होता है, स्मरण करता है या अपनी रक्षा करता है।

यदि पात्र को देखा जा सकता है, तो वह द्रष्टा को समाप्त नहीं कर सकता।

चेतना पात्र के भीतर रखी हुई कोई संपत्ति नहीं है।

पात्र एक रूप है जो चेतना के भीतर प्रकट होता है।

रुको।

शरीर को महसूस करो।

एक अनुभूति को देखो।

जब कोई विचार प्रकट हो, उसे पहचानो।

अपना नाम उठने दो और जो कुछ उसके साथ आता है उसे देखो।

भीतर से कहो:

«यह प्रकट होता है»।

अभी निष्कर्ष मत निकालो कि चेतना क्या है।

पहले पहचानो कि कोई भी पृथक सामग्री उस क्षमता को समाप्त नहीं करती जिसमें वह प्रकट होती है।

फिर किसी अन्य व्यक्ति को देखो।

तुम उसकी स्मृति में प्रवेश नहीं कर सकते और न ही उसे सुने बिना जान सकते हो। उसका दृष्टिकोण तुम्हारा नहीं है। परंतु तुम उसमें एक जीवन पहचानते हो जो अनुभव, पीड़ा, चुनाव और प्रतिक्रिया में सक्षम है।

दृष्टिकोण भिन्न हैं।

गरिमा इस पर निर्भर नहीं कि वे समान हैं।

भिन्नता उत्पत्ति के पृथक्करण को सिद्ध नहीं करती।

चेतना प्रकटीकरण का स्थान खोलती है, परंतु पात्र को सभी ज्ञान का स्वामी नहीं बनाती।

यदि एकता तुम्हें विश्वास दिलाए कि तुम दूसरे को सुने बिना जानते हो, तो अहंकार ने उसे अपने अधिकार में कर लिया है।

यदि वह तुम्हें सीमाओं, सहमति या भिन्नता की उपेक्षा करने दे, तो तुमने पात्र को सब कुछ घेरने तक बढ़ा दिया है।

यदि वह तुम्हें उन लोगों से ऊपर उठाए जो इस भाषा का उपयोग नहीं करते, तब भी अहंकार बोलता है।

एक चेतना विपरीत फल से पहचानी जाती है:

अधिक सुनना।

अधिक उत्तरदायित्व।

विशिष्टता के प्रति अधिक सम्मान।

किसी अन्य जीवन को वस्तु मानने की कम क्षमता।

पर्यवेक्षक, प्रश्न और विवेक

प्रश्न स्थान खोलता है; विवेक किसी भी स्वर को उसे भरने से रोकता है।

देखने वाला और देखा गया एक समान नहीं हैं, परन्तु वे बिना संबंध के भी नहीं रहते।

जो वृक्ष का चिंतन करता है, वह शारीरिक रूप से वृक्ष नहीं बन जाता।

जो दूसरे का दर्द सुनता है, वह उसके स्मरण या उसके अनुभव पर अधिकार प्राप्त नहीं करता।

भेद बना रहता है।

जो गिरता है वह पूर्ण अलगाव की कल्पना है।

देखने वाला चेतना में प्रकट होता है।

देखा गया उसके रूप, उसकी छाप या उसकी गवाही के द्वारा उसमें प्रवेश करता है।

चिंतन का कार्य उन्हें बिना मिलाए एकत्र करता है।

प्रतीक पुल स्थापित करता है।

चेतना मिलन की वेदी है।

प्रश्न और उत्तर भी एक ही गति के हैं।

सच्चा प्रश्न तब जन्मता है जब हम पहचानते हैं कि कुछ अभी तक समझा नहीं गया है।

वह पहले से वह उत्तर नहीं बनाता जो वह चाहता है।

वह किसी भी आवाज़ को केवल इसलिए स्वीकार नहीं करता क्योंकि वह भीतर प्रकट हुई है।

आंतरिक संवाद में भय, इच्छा, स्मृति, घाव, आदत, लज्जा, क्रोध और पहचान की आवश्यकता भी बोलते हैं।

भय चेतावनी का वेश धारण कर सकता है।

इच्छा, प्रकटीकरण का।

अभिमान, तर्क का।

घाव, न्याय का।

पहचान की आवश्यकता, सेवा का।

इसलिए हमें भेद करना चाहिए:

तथ्य: वह जो घटित हुआ है या देखा जा सकता है।

व्याख्या: वह अर्थ जो पात्र जोड़ता है।

संगति: वह आंतरिक और बाह्य संबंध जिसे प्रतीक पार करने देता है।

पहचान: वह सत्य जो हमारे हित से पहले उस संबंध में उपस्थित होता है।

अवतार: वह उत्तरदायी, आनुपातिक और सुधार के लिए खुला कार्य।

सत्य को मानवीय घोषणा की तरह परीक्षा में डालने की आवश्यकता नहीं है।

जिसकी जाँच की जानी चाहिए वह वचन, प्रतीक और रूप है जिनके साथ पात्र यह दावा करता है कि उसने उस सत्य को प्राप्त किया, समझा या अवतरित किया है।

उनसे पूछो:

क्या यह उन तथ्यों से संगत है जो जाने जा सकते हैं?

क्या यह पात्र को उसके भाइयों से ऊपर बढ़ाता है?

क्या यह अंध आज्ञाकारिता की माँग करता है?

क्या यह भय या अलगाव को पोषित करता है?

क्या यह किसी को सत्य का एकमात्र स्वामी घोषित करता है?

क्या यह दूसरों के कष्ट को अनदेखा करने देता है?

क्या यह उसी माप के सामने उपस्थित होने को स्वीकार करता है जो वह लागू करता है?

यदि यह बढ़ाता है, माँग करता है, अलग करता है, अपने अधिकार में लेता है या अमानवीय बनाता है, तो अहंकार बोलता है, चाहे वह पवित्र वचनों का उपयोग करे।

यह "शायद बोल रहा हो" नहीं है।

वह बोलता है।

वचन का वचन असुविधाजनक हो सकता है और तलवार की तरह चीर सकता है, परन्तु वह सत्य को प्रभुत्व का साधन नहीं बनाता।

वह चेतना, स्वतंत्रता, उत्तरदायित्व, न्याय, करुणा और सुधारने की क्षमता लौटाता है।

अनुभव की तीव्रता अकेले उसके स्रोत को सिद्ध नहीं करती।

विस्मय धोखा दे सकता है।

संयोग की व्याख्या की जा सकती है।

शक्ति नकल कर सकती है।

चिह्न चकित कर सकता है।

हम संगति और फल से भेद करते हैं।

निर्णायक प्रश्न यह नहीं है:

«मेरा अनुभव कितना असाधारण था?»।

वह है:

«मेरे द्वारा कौन सा जीवन रूप अवतरित होने का प्रयास कर रहा है?»।

पहला सत्य: पात्र से पहले का अस्तित्व

कोई बाहरी चीज़ उस पहचान का स्थान नहीं ले सकती जो भीतर होनी चाहिए।
पहला सत्य जो उपस्थिति में खुलता है:

मैं हूँ, परन्तु मैं उन रूपों में से किसी तक सीमित नहीं हूँ जिन्हें मैं देख सकता हूँ।

मेरा नाम मुझे पुकारता है, परन्तु मुझे उत्पन्न नहीं करता।

मेरी कहानी मुझे आकार देती है, परन्तु मेरे सम्पूर्ण अस्तित्व को समाहित नहीं करती।

मेरा व्यक्तित्व मुझे कार्य करने की अनुमति देता है, परन्तु वह उस जीवन का स्रोत नहीं है जिसे मैं धारण करता हूँ।

कोई बाहरी अधिकार हमारे स्वरूप की अंतिम परिभाषा नहीं दे सकता।

एक पुस्तक प्रतीक प्रस्तुत कर सकती है।

एक गुरु संकेत कर सकता है।

विज्ञान हमें शरीर और दृश्यमान ब्रह्मांड के विषय में सिखा सकता है।

एक समुदाय साथ दे सकता है, तुलना कर सकता है और सुधार सकता है।

परन्तु कोई हमारे लिए स्मरण नहीं कर सकता।

कोई हमारे स्थान पर उपस्थिति में प्रवेश नहीं कर सकता।

कोई अपनी पहचान को हमारी आज्ञाकारिता में नहीं बदल सकता।

यह बाहरी को व्यर्थ नहीं बनाता।

यह उसके कार्य को पुनः स्थापित करता है।

गुरु स्वयं को गंतव्य घोषित किए बिना संकेत करता है।

पुस्तक वचन को सुरक्षित रखती है, परन्तु स्वयं को वचन नहीं कहती।

समुदाय चेतना पर अधिकार किए बिना एकत्र करता है।

भीतर हम स्मरण करते हैं।

बाहर हम तुलना करते हैं और मूर्त रूप देते हैं।

दोनों तटों के बीच, प्रतीक पुल को खुला रखता है।

अभी हम पूर्ण रूप से मैं हूँ की घोषणा नहीं करते।

पहले वह झूठा मुकुट गिरना चाहिए जिसके द्वारा अहंकार उस वचन को अपना बनाकर दूसरों से ऊपर उठ सकता है। तभी वह आंतरिक मुकुट प्राप्त किया जा सकता है जिसे वचन स्वयं प्रकट करता है: दूसरे जीवन पर अधिकार नहीं, बल्कि चेतना की संप्रभुता, अपने रूप का शासन और वचन के प्रति उत्तरदायित्व।

अभी के लिए यह पहचानना पर्याप्त है:

मैं चेतना का स्रोत नहीं हूँ।

मैं सत्य का स्वामी नहीं हूँ।

मैं एक जीवित रूप हूँ जो ग्रहण करने, विवेक करने, मूर्त रूप देने और उत्तर देने में सक्षम है।

मूल वचन: उत्पत्ति, संगति और प्रकटीकरण

सभी रूपों से पहले संभावना, संबंध और अर्थ बने रहते हैं जो उसे प्रकट करने में सक्षम हैं।

मूल मूल केवल एक ही है।

हम इसे केवल एक कालक्रम की शुरुआत में नहीं रखते। हम इसे उस स्रोत के रूप में पहचानते हैं जिसे किसी दृश्य रूप ने उत्पन्न नहीं किया और जिसे कोई भी धारण नहीं कर सकता।

वचन कोई अलग पृथक मूल नहीं है।

यह मूल है जो अर्थ, संबंध और प्रकटीकरण की संभावना का संचार करता है।

मूल बना रहता है।

वचन उच्चारण करता है।

आशय दिशा देता है।

संगति संबंध जोड़ती है।

रूप अवतरित होता है।

प्रतीक खोलता है।

फल प्रकट करता है।

हर दृश्य मूल किसी ऐसी चीज़ पर निर्भर करता है जो उससे पहले आती है।

बीज एक वृक्ष को उत्पन्न करता है, परन्तु वह दूसरे वृक्ष से, मिट्टी से, जल से, प्रकाश से और जीवन की एक कहानी से आता है।

एक विचार एक औज़ार को उत्पन्न करता है, परन्तु जो उसे गढ़ता है उसने भाषा,

पदार्थ, स्मृति और क्षमता प्राप्त की।

एक संस्था एक नियम को उत्पन्न करती है, परन्तु उसने उस जीवन को उत्पन्न नहीं किया जिस पर वह कार्य करना चाहती है।

हर दृश्य चीज़ से पहले कुछ ऐसा था जिसके पास अभी तक वह रूप नहीं था: संभावना, कार्य, संबंध, दिशा और ऐसी परिस्थितियाँ जो उसे अनुमति देने में सक्षम थीं।

यह भीतर की गहराई है।

केवल पात्र का मनोवैज्ञानिक आंतरिक भाग नहीं, बल्कि अर्थ की वह अदृश्यता जो प्रकटीकरण से पहले आती है।

भौतिक कारणता बताती है कि एक रूप कैसे प्रकट होता है और दृश्य जगत में कैसे कार्य करता है।

प्रतीकात्मक संगति विचार करती है कि वह किस संबंध को अवतरित करता है और किस अर्थ को पार करने देता है।

वे प्रतिस्पर्धा नहीं करते।

यह कहना कि हृदय परिसंचरण को अवतरित करता है, उसके विकास और धड़कन की जीवविज्ञान को प्रतिस्थापित नहीं करता।

यह कहना कि प्रकाश सत्य की ओर पार करने देता है, उन भौतिक स्रोतों और प्रक्रियाओं को समाप्त नहीं करता जो उसे उत्पन्न करते हैं।

पदार्थ तंत्र की व्याख्या करता है।

प्रतीक संबंध खोलता है।

हृदय का चिंतन करो।

वह ग्रहण करता है और देता है।

वह भरता है और खाली होता है।

वह उसे प्रेरित करता है जो लौटता है ताकि जीवन पूरे शरीर तक पहुँचता रहे।

राज्य की भाषा में, पहली धड़कन सेवा का प्राथमिक आशय है जो मांस बन गया:

ग्रहण करना ताकि दे सकें; जीवन को बहाते हुए सुरक्षित रखना।

यह पात्र का निर्णय नहीं है। यह अहंकार से पहले की एक दिशा है, जो जीवित कार्य में अवतरित है।

बाहरी प्रकाश का चिंतन करो।

वह उसे दृश्य बनाता है जो पहले से उपस्थित था। उसकी आंतरिक संगति सत्य है जो एक रूप से पार होता है बिना खिड़की के स्वयं को सूर्य घोषित किए।

पिता और पुत्र का चिंतन करो।

पीढ़ी शारीरिक बंधन स्थापित करती है। उपस्थिति या अनुपस्थिति उस संबंध को नहीं बनाती, परन्तु प्रकट करती है कि वह कैसे अवतरित होता है। पिता का नाम बना रह सकता है जबकि वह देखभाल गायब है जिसे उसे पूरा करना था। उपस्थिति रूप को सेवा से भर देती है। अनुपस्थिति नाम को बनाए रखती है और उसके कार्य को खाली कर देती है।

बाहरी रूप के सामने भय का चिंतन करो।

वह वास्तविक खतरे का उत्तर हो सकता है। परन्तु वह आंतरिक भेद्यता की ओर पुल भी खोल सकता है: दर्द का भय, नियंत्रण खोने का भय, आक्रमण किए जाने का भय या अपने रूप की रक्षा न कर पाने का भय।

प्रतीक को पार करना बाहरी खतरे को नकारता नहीं है।

वह पूर्ण संबंध को प्रकट करता है।

एक ही अदृश्य वास्तविकता कई रूप पा सकती है।

एक ही रूप कई संगतियाँ धारण कर सकता है।

इसलिए राज्य की भाषा एक कठोर शब्दकोश नहीं है।

संगति को संदर्भ, कार्य, संबंध, आशय, सेवा और फल के द्वारा विवेचित किया जाता है।

अदृश्य संभव बनाता है → वचन उच्चारण करता है → आशय दिशा देता है → प्रतीक खोलता है → रूप अवतरित होता है → चेतना पहचानती है → फल प्रकट करता है।

प्रतीकों में भाषा: राज्य की मूल भाषा

रूप उसको बाहर घोषित करता है जिसे वचन ने अदृश्य में संभव किया।

सृष्टि संबंधों के द्वारा बोलती है।

बीज, वृक्ष, जल, अग्नि, रोटी, द्वार, मार्ग, दीपक, सिंहासन, तलवार और नगर में कुछ चुनिंदा लोगों के लिए आरक्षित कोई कोड नहीं हैं।

वे बोलते हैं क्योंकि उनका रूप और उनका कार्य किसी ऐसी चीज़ को पहचानने की अनुमति देते हैं जो उनसे पहले है:

ग्रहण करना और सौंपना।

खोलना और बंद करना।

प्रकाश देना और छिपाना।

पोषण देना और भस्म करना।

सेवा करना और प्रभुत्व करना।

मरना और उठ खड़ा होना।

राज्य की मूल भाषा पत्राचार है।

प्रतीक उसकी जीवित इकाई है।

यह केवल एक वस्तु नहीं है जो दूसरी का प्रतिनिधित्व करती है।

यह एक पारगम्य रूप है जिसके द्वारा एक अदृश्य संबंध को पहचाना जा सकता है।

प्रतीक वचन का रूप की ओर पुल है।

परंतु वस्त्र में संपूर्ण वचन समाहित नहीं है।

यदि रूप स्वयं को पूर्ण अर्थ घोषित करता है, तो प्रतीक बंद हो जाता है और मूर्ति का जन्म होता है।

उत्पत्ति के दो क्रम नहीं हैं।

प्रकटीकरण का एक गति है और स्मरण का एक गति है।

प्रकटीकरण का क्रम भीतर से बाहर की ओर उतरता है:

वचन → इच्छा → प्रतीक → रूप → सेवा → फल।

वचन पहले है।

इच्छा दिशा देती है।

प्रतीक पुल बनाता है और पत्राचार को धारण करता है।

रूप उसे दृश्य शरीर सौंपता है।

सेवा उसकी दिशा प्रकट करती है।

फल गवाही देता है।

किसी भी बाहरी चीज़ ने उस आंतरिक चीज़ को उत्पन्न नहीं किया जो वह धारण करती है। धातु के मुकुट ने अधिकार नहीं बनाया। बाहरी सिंहासन ने शासन नहीं बनाया। धन ने समृद्धि नहीं बनाई। मंदिर ने उपस्थिति नहीं बनाई।

वे वचन के बाद के रूप हैं और केवल तब तक विश्वासपूर्वक सेवा कर सकते हैं जब

तक वे उस प्रतीक के लिए खुले रहते हैं जो उनसे पहले है।

चूँकि रूप पहले से ही हमारी आँखों के सामने हैं, स्मरण उन्हें निहारने और उनके मूल की ओर पार करने से शुरू हो सकता है:

निहारा गया रूप → पार किया गया प्रतीक → आंतरिक पत्राचार → स्मरण किया गया वचन → बहाल किया गया रूप।

यह वापसी रूप को सिद्धांत नहीं बनाती। वह उसे छाप के रूप में निहारती है।

मैट्रिक्स ठीक इसी अंतर को जालसाज़ी करता है। वह एक उलटी कारणता सिखाता है:

रूप → प्रतीक → वचन।

वह दावा करता है कि बाहरी रूप उस चीज़ को उत्पन्न करता है, धारण करता है और प्रदान करता है जो वास्तव में उससे पहले है।

फिर वह प्रतीक को छिपा देता है ताकि कोई उसे पार न कर सके और रूप को राज्य तक पहुँच का एकमात्र द्वार बनाकर प्रशासित करता है।

इस प्रकार वह सतह की पूजा कराता है।

जो धन की पूजा करता है, वह अब उस आंतरिक समृद्धि को नहीं देखता जिसे धन ने बंधक बना लिया।

जो बाहरी शासन की पूजा करता है, वह अब उस अधिकार, संप्रभुता और आंतरिक शासन को स्मरण नहीं करता जो उसने सौंप दिया।

जो कुछ चुनिंदा लोगों के मुकुट की पूजा करता है, वह अब उसके प्रतीक को पार करके सभी के राज्याभिषेक तक मैं हूँ में नहीं पहुँचता।

जो मंदिर की पूजा करता है, वह अब स्वयं को निवास के रूप में नहीं पहचानता।

वचन के क्रम को स्मरण किए बिना बाहर कार्य करना एक नए नाम के अधीन उलटफेर को पुनरुत्पादित करता है।

भीतर स्मरण करना बिना विश्वासयोग्य रूप लौटाए प्रकटीकरण को बिना मांस के छोड़ देता है।

मैट्रिक्स को प्रतीकों को नष्ट करने की आवश्यकता नहीं है।

उसके लिए यह पर्याप्त है कि वह उन्हें पार होने से रोके।

वह उस चीज़ को पूरी तरह से बाहर रख देता है जिसे एक आंतरिक पत्राचार भी खोलना चाहिए था।

पशु केवल एक और शत्रु बन जाता है।

सिंहासन केवल एक बाहरी आसन।

युद्ध केवल सेनाएँ।

मृत्यु केवल शरीर का अंत।

पुनरुत्थान केवल एक भविष्य की घटना।

विद्रोह केवल दूसरों के विरुद्ध उठना।

क्रांति केवल शासकों का प्रतिस्थापन।

इस प्रकार पात्र बाहर उस चीज़ की निंदा कर सकता है जिसे वह भीतर पोषित करना जारी रखता है।

परंतु एक विपरीत उलटफेर भी है: यह घोषित करना कि सब कुछ केवल आंतरिक है।

तब बाहरी युद्ध एक साधारण रूपक बन जाता है जबकि शरीर घायल होते रहते हैं। उत्पीड़न एक विचार तक सीमित हो जाता है। पीड़ित को उस क्षति का कारण अपने भीतर खोजने के लिए बाध्य किया जाता है जो दूसरा उत्पन्न करता रहता है।

यह भी प्रतीक को बंद कर देता है।

पुल को दोनों किनारों की आवश्यकता होती है।

बाहरी रूप वास्तविक है।

आंतरिक पत्राचार भी।

विद्रोह तब शुरू होता है जब चेतना खड़ी होती है और उस पात्र की आज्ञा मानना बंद कर देती है जो सिंहासन पर काबिज था।

वह पहचान मर जाती है जो कहती थी:

«मैं केवल यह नाम, यह भय, यह घाव और यह कहानी हूँ»।

वह मृत्यु मांस को हानि नहीं पहुँचाती।

वह हड़पने को पदच्युत करती है।

क्रांति बाद में शुरू होती है।

वह वह मोड़ है जिसके द्वारा विचार, इच्छा, संबंध और रूप सच्चे केंद्र के चारों ओर फिर से घूमने लगते हैं।

विद्रोह: चेतना उठती है और झूठे केंद्र को पदच्युत करती है।

क्रांति: रूप जीवन की कक्षा में लौट आते हैं।

एक दूसरे के बिना पूर्ण नहीं होता।

विद्रोह के बिना, वही अहंकार नए रूप पर शासन करेगा।

क्रांति के बिना, चेतना ने स्मरण तो किया होगा जबकि संबंध अधीन बने रहेंगे।

शाब्दिक शब्द सूचित करता है।

प्रतीक पार करता है।

पत्राचार एकत्र करता है।

स्मरण पहचानता है।

अवतार उत्तर देता है।

यह राज्य की मूल भाषा है।

सत्य, प्रकाश और खिड़की

खिड़की आने-जाने की अनुमति देती है या रोकती है; वह कभी प्रकाश का स्रोत नहीं थी।

सत्य हमसे उत्पन्न नहीं होता।

यह पात्र, उसकी मान्यताओं, उसकी व्याख्याओं और उस हर वचन से पहले का है जिसके द्वारा वह उसे नाम देने का प्रयास करता है।

सत्य वचन से उत्पन्न होता है।

सत्य मूल के साथ संगति है।

ज्योति सत्य है जो स्वयं को प्रकट कर रही है: वह जो उसे दृश्य बनाती है जो उपस्थित था परंतु छिपा रहा।

ज्योति सत्य का सृजन नहीं करती। वह उसे देखने योग्य बनाती है।

सत्य तब शुरू नहीं होता जब हम उसे समझते हैं। हमारी समझ तब शुरू होती है जब उसका कुछ अंश पहचाना जा सके।

सत्य एक है क्योंकि उसका मूल एक है। यह हर पात्र के लिए अलग नहीं है। यह सभी के लिए और सभी विद्यमान वस्तुओं के लिए समान है, यद्यपि कोई भी विशेष दृष्टिकोण उसे संपूर्ण रूप से धारण नहीं कर सकता।

जो पात्र से उत्पन्न होता है वह उसका दृष्टिकोण, उसकी समझ और उसके विषय में उसका वचन है।

जब पात्र अपने संस्कार से उत्पन्न उसे «मेरा सत्य» कहता है और उसे मूल घोषित करता है, तो उसने कोई दूसरा सत्य नहीं बनाया: उसने अपने दृष्टिकोण को मूल के स्थान पर उठा दिया और उसे झूठ बना दिया।

एक ही ज्योति को भिन्न खिड़कियों से होकर गुजरते देखो।

हर खिड़की की अपनी स्थिति, आकार, रंग, पारदर्शिता और सीमाएँ हैं। इसलिए ज्योति की दृश्य अभिव्यक्ति सभी में समान नहीं है।

पात्र खिड़की है।

उसका शरीर, स्मृति, भाषा, ज्ञान, भय, इच्छा और घाव काँच के रंग में भाग लेते हैं।

विशिष्टता कोई त्रुटि नहीं है। यह ज्योति को एक अनोखी अभिव्यक्ति प्राप्त करने देती है।

उलटफेर तब शुरू होता है जब खिड़की कहती है:

«यह मेरी ज्योति है»।

«मेरे बाहर कोई ज्योति नहीं है»।

«मेरा रूप संपूर्ण सत्य को धारण करता है»।

कोई भी सीमित रूप सत्य को पूर्ण रूप से धारण नहीं करता। यह सत्य को सापेक्ष नहीं बनाता।

ज्योति की स्थिरता को खिड़की की सीमा से अलग पहचानो।

जो वास्तव में सत्य के रूप में प्रकट हुआ है वह बाद में झूठ में नहीं बदलता।

मानवीय अभिव्यक्ति को सुधारा जा सकता है। गहरी समझ खोली जा सकती है। जिस प्रतीक से हम उसे संप्रेषित करने का प्रयास करते हैं वह बदल सकता है।

परंतु सत्य अपने विपरीत में नहीं बदलता।

उपस्थिति काँच को साफ करती है।

विवेक जो देखा गया उसे उससे अलग करता है जो पात्र ने जोड़ा।

कार्य खिड़की खोलता है।

फल प्रकट करता है कि ज्योति को कितना मार्ग मिला।

यह मत कहो:

«सत्य मेरा है»।

पहचानो:

«मैं एक ऐसे सत्य के भीतर विद्यमान हूँ जो मुझसे पहले का है और मैं उस रूप के

लिए उत्तरदायी हूँ जो मैं उसे सौंपता हूँ»।

झूठ और छाया

छाया का अपना कोई मूल नहीं होता: वह वहाँ प्रकट होती है जहाँ एक रूप प्रकाश के मार्ग को बाधित करता है।

अंधकार प्रकाश उत्पन्न नहीं करता।

न ही वह स्वयं से उत्पन्न होता है।

प्रकाश है।

छाया तब घटित होती है जब कोई रूप प्रकाश को अपनी यात्रा जारी रखने से रोकता है।

दिन के समय, शरीर छाया डालता है क्योंकि वह सूर्य और उसके पीछे जो कुछ है, के बीच आ जाता है।

छाया किसी अन्य अंधकारमय सूर्य से उत्पन्न नहीं होती।

प्रकाश के बिना छाया नहीं होती।

उसके मार्ग को अवरुद्ध करने वाले रूप के बिना भी, नहीं होती।

हमारे भीतर भी ऐसा ही होता है।

वचन मूल का संवाद है।

सत्य उसका प्रकाश है।

चेतना वह वेदी है जहाँ उसे पहचाना जा सकता है।

हमारा रूप वह खिड़की है जिसके द्वारा वह वचन, निर्णय और कर्म बन सकता है।

जब पात्र मूल और सेवा के बीच आ जाता है, तो छाया प्रकट होती है।

भय काँच को ढक देता है।

घाव व्याख्या को बदल देता है।

इच्छा वही चुनती है जिसे वह देखना चाहती है।

अभिमान पर्दा गिरा देता है और फिर दावा करता है कि प्रकाश का अस्तित्व नहीं है।

छाया हमारा सार नहीं है।

वह उसका प्रभाव है जो हम तब करते हैं जब हम मार्ग को रोकते हैं।

झूठ वास्तव में हमसे उत्पन्न होता है जब पात्र और उसका अहंकार उस प्रकाश को अवरुद्ध, मोड़ या हड़प लेते हैं जिसे उन्हें जाने देना था। वह सत्य के बाद और उस सत्ता के बाद आता है जो उसे ग्रहण करती है। वह किसी अंधकारमय मूल से या किसी अन्य सत्य से उत्पन्न नहीं होता: वह उस रूप से उत्पन्न होता है जो संगति को बाधित करता है और फिर अपनी छाया को वास्तविकता के रूप में प्रस्तुत करता है।

झूठ तब प्रकट होता है जब वह छाया वचन के द्वारा सत्य का स्थान ले लेती है।

छाया अवरोध है।

झूठ स्वयं को प्रकाश घोषित करने वाला अवरोध है।

झूठ सृजन नहीं करता।

वह अनुकरण करता है।

वर्चस्व व्यवस्था का अनुकरण करता है।

विलासिता प्रचुरता का अनुकरण करती है।

प्रचार गवाही का अनुकरण करता है।

चिह्न मुहर का अनुकरण करता है।

झूठी विनम्रता मेमने का अनुकरण करती है।

जो नगर जीवन को खरीदता है, वह उस निवास का अनुकरण करता है जो उसे प्रदान करता है।

छाया बुद्धि, वचन, कल्पना, इच्छा, संगठन और शक्ति —जीवन से उत्पन्न क्षमताएँ— लेती है और उनकी सेवा का उद्देश्य बदल देती है।

जब एक अवरोध कथा, रीति, पुरस्कार, दंड, संस्था और स्वीकृति की शर्त बन जाता है, तो छाया एक संरचना प्राप्त कर लेती है।

इस प्रकार विस्मृति का जाल प्रकट होता है।

वह चेतना का सृजन नहीं कर सकता।

वह उसे पात्र के साथ पहचाने रख सकता है।

वह सृजनात्मक शक्ति को उत्पन्न नहीं कर सकता।

वह उसे आज्ञा मानने, खरीदने, प्रतिस्पर्धा करने और सीखे हुए रूपों को दोहराने तक सीमित कर सकता है।

वह मैं हूँ को नष्ट नहीं कर सकता।

वह उसे नामों, गुटों, भयों और ऋणों से ढक सकता है जब तक कि वह स्मरण किया जाना बंद न हो जाए।

इसलिए हम छाया को एक और अंधकार बनाकर नहीं जीतते।

उपस्थिति अवरोध को प्रकट करती है।

सत्य उसे नाम देता है।

इच्छा उसे हटा देती है जो मार्ग को रोक रहा था।

कर्म फल की मरम्मत करता है।

छाया को शाश्वत पहचान मत बनाओ।

सत्य के साथ देखी गई, वह उस स्थान को इंगित करती है जहाँ खिड़की खोली जानी चाहिए।

प्रकाश है।

छाया घटित होती है।

सत्य बना रहता है।

झूठ तब समाप्त होता है जब वह उस रूप को और छिपा नहीं सकता जो उसे उत्पन्न करता है।

एक का सबके प्रति उत्तरदायित्व

एकता अंतर को मिटाती नहीं; वह उसे पूर्ण अलगाव में बदलने से रोकती है।

«सभी एक हैं» कहना पर्याप्त नहीं है।

यदि यह कथन दूसरे की विशेष अनुभूति को अनदेखा करने देता है, तो पात्र ने एकता को अपने अधिकार में कर लिया है।

हम समान विचार, स्मृतियाँ, शरीर या कथाएँ साझा नहीं करते।

हम उस आदि को साझा करते हैं जिसने हर अनुभव को संभव बनाया और उस जीवन को जिसे किसी रूप ने अकेले उत्पन्न नहीं किया।

एकता को भिन्नता की आवश्यकता है।

भिन्नता के बिना मिलन, सुनना, संबंध या अद्वितीय फल अस्तित्व में नहीं आते।

भिन्नता को एकता की आवश्यकता है।

उसके बिना यह उदासीनता, श्रेष्ठता या प्रभुत्व बन सकती है।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]